



सत्यमेव जयते

प्रागज्योतिष

राजभाषा हिंदी पत्रिका - तृतीय अंक



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – असम का कार्यालय, मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी - 781029

ई-मेल : agaeassam@cag.gov.in



बाएं से : सुश्री प्रीति राजभर (कनिष्ठ अनुवादक), श्री योगेश कुमार मिश्र (हिंदी अधिकारी), श्री हरि प्रकाश (वरिष्ठ उप महालेखाकार), श्री के. एस. गोपीनाथ नारायण (प्रधान महालेखाकार), श्री रवि कुमार (कनिष्ठ अनुवादक) एवं श्री विवेक कुमार साव (कनिष्ठ अनुवादक)

प्रागज्योतिष

राजभाषा हिंदी पत्रिका – तृतीय अंक
वर्ष 2024



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – असम का कार्यालय, मैदामगांव,
बेलतला, गुवाहाटी – 781029

ई-मेल : agaeassam@cag.gov.in

प्रागज्योतिष परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री के. एस. गोपीनाथ नारायण

प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

श्री हरि प्रकाश

वरिष्ठ उप-महालेखाकार/प्रशासन

प्रधान संपादक

श्री योगेश कुमार मिश्र

हिंदी अधिकारी

सह संपादक

सुश्री सीमा देवी

वरिष्ठ अनुवादक

श्री रवि कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

श्री विवेक कुमार साव

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री प्रीति राजभर

कनिष्ठ अनुवादक

-: अस्वीकरण :-

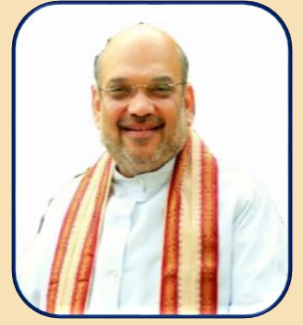
रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे मुख्य संरक्षक, संरक्षक, परामर्शदात्री समिति तथा संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

01	हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश.....	1
02	प्रधान महालेखाकार का संदेश	3
03	वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन का संदेश	4
04	प्रधान संपादक की कलम से	5
05	घर की याद: एक लड़के की कहानी	कहानी श्री संदीप पूनिया, लेखाकार 6
06	बचपन	कविता श्री संदीप पूनिया, लेखाकार 9
07	बेटी	लेख श्रीमती पूनम पूनिया 10
08	मोहब्बत भरी निगाहें	कविता श्रीमती पूनम पूनिया 14
09	इंटरनेट के लाभ से इंटरनेट की लत तक का सफ़र	लेख श्री अंकित, लेखाकार 15
10	संभाषण कला	लेख कुमारी सोनिया 17
11	डिजिटल भारत	लेख श्रीमती दीप्रीया कुमारी बर्नवाल 18
12	परिवार	लेख श्री दीपक कुमार बर्नवाल, स.ले.अ. 20
13	प्रौद्योगिकी और गोपनीयता के अधिकारों का संगम: एक जटिल और विकसित हो रहा संबंध	लेख श्री विशाल कुमार सिंह, लेखाकार 24
14	भोलेनाथ - भाग-1	कहानी कु. सुयोग सूर्य मिश्र 27
15	बेटी की विदाई	कविता श्री मुकेश कुमार, डी.ई.ओ. 31
16	समर शेष है आ जाओ	कविता श्री योगेश कुमार मिश्र, हिंदी अधिकारी 32
17	सब कृष्ण में मिल जाएगा	कविता कु. सुयोग सूर्य मिश्र 34
18	दहेज कानून का दुरुपयोग	लेख श्रीमती सुमन मिश्र 36
19	तुम ही हो	कविता श्रीमती सुमन मिश्र 39
20	कौस्तुभ	कहानी श्री योगेश कुमार मिश्र, हिंदी अधिकारी 41
21	जहां चाह वहां राह	कहानी श्री योगेंद्र कुमार, स.ले.अ. 44
22	नारी का स्वरूप: गृहिणी और कामकाजी	कविता सुश्री प्रतिमा मजूमदार, सहा. पर्यवेक्षक 47
23	पिता	कविता श्री योगेंद्र कुमार, स.ले.अ. 48

हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरु नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो रही

है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

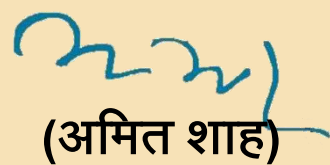
साल 1977 में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्घरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2024


(अमित शाह)

प्रधान महालेखाकार का संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, असम, गुवाहाटी द्वारा गृह पत्रिका “प्रागज्योतिष” के तीसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। अहिंदी भाषी क्षेत्र से प्रकाशित पत्रिका “प्रागज्योतिष” राजभाषा हिंदी के गौरव को रेखांकित करने वाली एक विशिष्ट रचनात्मक अभियान की शक्ल में हमारे सामने आ रही है।

अवलोकन का गुण प्रत्येक व्यक्ति में अंतर्निहित होता है। उचित अवसर मिलने पर व्यक्ति अपने अवलोकन को अभिव्यक्त करता है। रचनाकार अपनी लेखनी द्वारा समाज को नई दिशा देने की कोशिश करता है। अपने अनुभवों को शब्दों में व्यक्त करने के लिए कई विधाओं को अपनाता है। इसमें समाविष्ट सभी रचनाएं लेख एवं कविताएं रुचिकर ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय हैं, जो निःसंदेह राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में मील का पत्थर साबित होगा।

इस सुंदर रचनात्मक प्रयास में भागीदार सभी लोगों को मेरी ओर से बधाई। आशा है कि आने वाले समय में भी, इसी प्रकार की उपयोगी रचनाएं हमें प्राप्त होती रहेंगी और पाठक इससे लाभान्वित होते रहेंगे।

श्री के. एस. गोपीनाथ नारायण

श्री के. एस. गोपीनाथ नारायण

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

कार्यालय असम, गुवाहाटी

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन का संदेश



यह राजभाषा पत्रिका हमारे कार्यालय का दर्पण है। इससे कार्यालय की सांस्कृतिक व अन्य प्रकार की गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक अभिरुचि का भी पता चलता है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है, इसलिए सभी सरकारी कार्यालयों द्वारा हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन अनिवार्य रूप से किया जाता है। वार्षिक हिंदी पत्रिका प्रागज्योतिष का तीसरा अंक आपको सौंपते हुए मुझे सुखद अनुभूति हो रही है।

साहित्य का देश व समाज पर फलदायी प्रभाव पड़ता है। इस नाते हमारा उत्तरदायित्व और बढ़ जाता है। अतः हमें बहुत समझ-बूझ के साथ ही साहित्य का सृजन करना चाहिए जिससे समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़े।

भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर 1949 को “हिंदी” को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी रहेगी और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार करना एवं उसका विकास करना, संघ का कर्तव्य है। संघ सरकार के अधिकारी/कर्मचारी होने के नाते हिंदी में कार्य करना तथा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हमारा भी संवैधानिक कर्तव्य है।

अंत में प्रागज्योतिष के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए सभी रचनाकारों एवं इसके विविध कार्यों से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का मैं विशेष आभार प्रकट करता हूँ, जिनके अथक प्रयास से यह संभव हुआ। मैं पत्रिका की प्रगति की कामना करता हूँ।

श्री हरि प्रकाश

व. उप महालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(ले. एवं हक) असम, गुवाहाटी

प्रधान संपादक की कलम से



नादं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च। मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

(पद्मपुराण/खंड 6 /उत्तर खंड/अध्याय 92)

भावार्थ : दे देवर्षि! मैं न तो वैकुण्ठ में निवास करता हूँ और न ही योगीजनों के हृदय में मेरा निवास होता है। जहाँ मेरे भक्त तन्मय होकर मुझको भजते हैं। मैं वहीं रहता हूँ।

जिस प्रकार भगवान संकीर्तन में बसते हैं उसी प्रकार हिंदी या अद्य भारतीय भाषा का विकास प्रयुक्ति के माध्यम से ही सिद्ध हो सकता है।

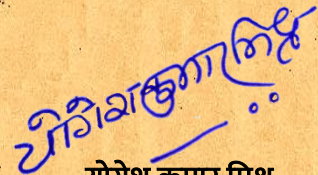
कोई भी कार्य या उद्देश्य केवल काहन बना देने से या उस पर चौकस निगरानी से सिद्ध नहीं हो सकता। वांछित प्रगति और लक्ष्य की पूर्ति तो लगन, प्रेम और परिश्रम से पाया जाता है। भाषा थोपी नहीं जा सकती, भाषा से प्रेम किया जाता है। हिंदी के प्रति प्रेम तो तभी पता चलेगा जब हम इसे क्रमशः अंकुरित, कुसुमित, पल्लवित, पुष्पित, विकसित और सुरभित होने का मौका देंगे।

वह भाषा लुप्तप्राय और बेजान हो जाती है जिसमें आम जन बात नहीं करते, साहित्य का सृजन नहीं होता और जिसे राजकाज में प्रयुक्त नहीं किया जाता है। कई भाषा अतीत में चले जा रहे हैं क्योंकि वे प्रचलन में नहीं हैं विलुप्ति की कगार पर जाने वाली भाषाओं में अद्दोम, एंड्रो, रंगकास, सेंगमई, तोलचा व अद्य शामिल हैं। इनके प्रयोग करने वाले कम हुए इनके भीतर लोच व ग्राह्यता की कमी हुई फलतः सब लुप्त हो गए, लेकिन हिंदी की बात अलग है। साहित्य सृजन, प्रगामी प्रयोग, प्रचलन, गीत-संगीत, सिनेमा, धारावाहिक और विज्ञापन दर ओर हिंदी की चमक, दमक और धमक है यही इसके विकास का प्रमाण है।

मैं पत्रिका के रचनाकारों को बधाई देता हूँ, उनके प्रयास की सराहना करता हूँ और आगे उनसे यही आशा करता हूँ कि ऐसे ही अपने ज्ञान और रचनात्मकता से प्रागज्योतिष को समृद्ध करते रहें। प्रागज्योतिष का यह तीसरा अंक हिंदी की सेवा में अग्रणी बना रहे दिग-दिगंत तक हिंदी की बयार बदे और बयार में रचनाधर्मिता की सुवास हो यही अंतःस्थल से यही कामना है। अंत में श्री गोपाल कुमार मिश्र, (धर्म शिक्षक, कवचित कोर) द्वारा रचित निम्नलिखित श्लोक बहुत समीचीन है जिसका अर्थ है "विकासिप्सिता भाषा नियमावलियों, ग्रंथों या शब्दकोश में ही ना रहे अपितु सदैव व्यवहार में आये।"

न वसेत्संहितायां न ग्रंथे न कोशे तथा।

आचारे निवर्तते वर्धमाना भाषा सदा॥


योगेश कुमार मिश्र
हिन्दी अधिकारी



परिचय

घर की याद: एक लड़के की कहानी

श्री संदीप पूनिया, लेखाकार

संदीप एक साधारण से गाँव का लड़का है, जिसने सपनों की ऊँचाइयों को छूने का इरादा किया था। उसका जीवन साधारण से लेकर बहुत हद तक खुशहाल था, परन्तु उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी, जो उसके सपनों का परिचायक थी।

संदीप का परिवार सामान्य था, पिता बिजली विभाग में एक छोटे से कर्मचारी थे और उनकी आर्थिक स्थिति भी सामान्य ही थी। पिता को जलती धूप में गड़ढे खोदते हुए फिर उनमें भारी-भरकम खंभों को खड़ा करते हुए देखा है, लेकिन संदीप के मन में था अनोखा सपना। वह नहीं चाहते थे कि उनके पिता जीवन भर सिर्फ गाँव की सीमाओं में ही रहे, उन्होंने सोचा था कि उनके लिए भी कुछ अलग होना चाहिए। संदीप का सपना था कि वह शहर में जाकर बड़ा आदमी बनेगा, अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारेगा, और उनके सपनों को पूरा करेगा।

उन्होंने कई संघर्षों और कठिनाइयों का सामना किया और उनकी मेहनत, लगन, और संघर्ष उसके सपनों के करीब ले आया। उसने शिक्षा में मेहनत की, कई काम किए और अपने लक्ष्य की दिशा में कदम बढ़ाया। आज, संदीप शहर में अपने सपनों की पहचान बनाने की ओर बढ़ रहे हैं, उनका परिवार उन्हें समर्थन दे रहा है।

गाँव की खुशबू

संदीप के गाँव का नाम गन्नौर, सोनीपत है जो कि हरियाणा में पड़ता है। उसके गाँव की खुशबू ने हमेशा उसे अपने घर की याद दिलाई। वहाँ की हर सुबह उजाले और स्वच्छता से भरी हुई थी। प्राकृतिक सौंदर्य ने उसके जीवन को रंगीन बनाया था। पक्षियों की चहचहाहट उसे प्रकृति से जुड़ी अनुभूतियों को याद दिलाती थी। उसके गाँव में हर एक चीज़ उसके लिए विशेष थी, चाहे वो घर का खाना हो या दोस्तों के साथ खेलने का समय।

उसके लिए गाँव में खेलना कुछ अद्वितीय ही था। वह अपने दोस्तों के साथ खेलते समय कभी पेड़ों के बीच छुपना और कभी खेतों में दौड़ना पसंद करता था। माँ के हाथ का बना खाना, गाँव की खुशबू और प्यार को आईना दिखाता था। पिता के साथ पार्क में जाना, उनके साथ समय बिताना उसके लिए अनमोल होता था।

शाम को परिवार के साथ बैठकर बातें करना अच्छा लगता था। इस तरह समय बिताना उसे समझदार बनाता था। गाँव की खुशबू ने संदीप के जीवन को खास महसूस कराया, जिसमें प्रेम, समृद्धि, और सफलता की खोज थी।

शहर की ओर कदम

एक दिन संदीप ने निर्णय लिया कि वह अपने परिवार के लिए कुछ करेगा। उसे गुवाहाटी जैसे शहर में नौकरी का प्रस्ताव मिला और वह अपने माता-पिता को यह खुशखबरी सुनाने के लिए दौड़ा। हालांकि, उसके माता-पिता ने उसे जाने से पहले सौ बार सोचने के लिए कहा, और कहे भी क्यों नहीं वो बेटा जिसको कभी माँ ने अपने आँचल से दूर नहीं जाने दिया जिसे पिता ने कभी धूप नहीं लगने दी वो उसे जाने भी क्यों देते लेकिन संदीप अपने निर्णय पर दृढ़ था। अपने परिवार की बेहतर जिंदगी और खुशियों के सपने के साथ वह शहर के लिए रवाना हो गया।

शहर की चुनौतियाँ

गुवाहाटी शहर पहुँचते ही संदीप को समझ आया कि यहाँ की जिंदगी गाँव से बिल्कुल अलग है। भीड़-भाड़, शोरगुल, और भागदौड़ ने उसे हैरान कर दिया। पहले कुछ दिन उसने अपने नए माहौल में तालमेल बिठाने में बिताए। उसे नौकरी तो

मिल गई थी, लेकिन नौकरी के साथ आने वाली जिम्मेदारियों और चुनौतियों ने उसे परेशान कर दिया। शहर की समस्याओं ने संदीप की क्षमताओं को नई चुनौती दी। गाँव की शांति और सरलता के बाद, शहर की भीड़-भाड़, तेजी से बदलते माहौल, और दुनिया की प्रतिस्पर्धा ने उसे एक नई दिशा में सोचने पर मजबूर किया।

नौकरी मिलने के बावजूद, संदीप ने जल्दी ही समझ लिया कि नई जगह, नए लोग, नई भाषा और नए दृश्यों के साथ जुड़ने के लिए उसे कुछ नई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। उसे समय की कमी, जिम्मेदारियों का बोझ, और स्थायी निरंतरता की जरूरत का सामना करना पड़ा।

शहरी जीवन में अनेक संघर्षों के बावजूद, संदीप का स्वभाव उसे हर मुश्किल का सामना करने की क्षमता देता रहा। उसने नई स्थितियों को स्वीकार कर मेहनत, अध्ययन, और सहयोग के माध्यम से अपने लक्ष्य की दिशा में कदम बढ़ाता रहा। धीरे-धीरे, वह शहर की चुनौतियों को स्वीकारते हुए अपने सपनों की ओर बढ़ता रहा।

घर की याद

शहर में रहते हुए संदीप को अपने गाँव की हर छोटी-बड़ी चीज़ याद आने लगी। उसे माँ के हाथ का खाना, पिता के साथ की बातें, और भाई-बहनों के साथ की शरारतें याद आतीं। जब भी उसे गाँव की याद आती, वह अपने परिवार से फोन पर बात करता, लेकिन फोन की बातचीत उसकी तड़प को कम नहीं कर पाती थी। माँ के हाथ का खाना संदीप के लिए वह स्वादिष्ट ज्ञान का प्रतीक था, जो उसे गाँव की मिठास का अनुभव कराता था। वह खुशहाली और समृद्धि की भावना के साथ उसके दिल को छू जाता था। जब वह शहर में था, तो उसे माँ के बनाए हुए परांठे, चावल और सब्जियों की खुशबू याद आती थी, जो उसे शांति का अनुभव देती थी।

पिता के साथ की बातें, संदीप के जीवन में आत्मविश्वास और संघर्ष की भावना भरती थी। पिता की सलाह, गुणवत्ता, और उनके साथ बिताए गए समय ने संदीप को जीवन में सही राह दिखाई। उनकी बातों में समझदारी और अनुभव की खोज थी, जो उसे हर मुश्किल से निपटने का सामर्थ्य देती थी।

भाई-बहनों के साथ की शरारतें संदीप के जीवन को रंगीन बनाती थी। उनके साथ बिताए गए पल, हंसी-मजाक, और आदान-प्रदान ने उसके जीवन को खुशी और साझेदारी से भर दिया। जब भी उसे उनकी याद आती, तो वह खुशी से भर जाता था और उनके साथ बिताए गए पलों की मिठास को याद करता था।

इस तरह, संदीप के लिए घर की यादें एक अद्भुत भावनात्मक संबंध का प्रतीक बनीं। उन्होंने अपने परिवार के साथ बिताए गए सुखद लम्हों की महक को सदैव अपने दिल में संजोए रखा।

संघर्ष और सफलता

संदीप ने खुद को संभालने की कोशिश की। उसने अपनी नौकरी में मेहनत की और धीरे-धीरे शहर की जिंदगी को अपनाने लगा। वह हर महीने अपने परिवार को पैसे भेजता और उनकी ख़ैर-ख़बर लेता। उसकी मेहनत रंग लाई और उसे प्रमोशन मिला। संदीप जब भी अपनी माँ से वादा करता था कि वह जल्द ही उनके पास लौटेगा लेकिन शहर और गाँव के बीच की दूरी ने एक माँ-पिता और बेटे के बीच की दूरी को इतना बढ़ा दिया कि घर जाने के लिए सौ बार सोचना पड़ता है, लेकिन काम की व्यस्तता और दूरी के कारण उसे हमेशा अपना वादा निभाने में देरी हो जाती। संदीप की कहानी में रोमांच तकनीक और जीवटता उसकी ताकत, संघर्ष, और सफलता को बताती है। उसकी मेहनत और उसकी जिद ने उसे नई ऊँचाइयों तक ले जाने में मदद की। जब वह अपने परिवार के साथ अपनी मीठी यादों को साझा करता, तो उसकी आँखों में एक अलग चमक होती।

एक बार, संदीप को एक अनोखा मौका मिला। उसकी कंपनी ने उसे एक बड़ी परियोजना के लिए चुना। यह परियोजना उसके करियर के लिए महत्वपूर्ण थी, लेकिन इसके लिए उसे दूसरे शहर में रहने की जरूरत थी। संदीप को यह फैसला

करना पड़ा कि क्या वह इस अवसर को छोड़कर अपने परिवार के पास लौटने की सोचेगा या नई चुनौती का सामना करेगा।

उसने अपनी सोच को देखा, और अंततः नए अवसर की ओर बढ़ा। उसने सोचा कि यही संघर्ष है जो उसे सफलता की ओर ले गया है। वह नए शहर में रहकर अपने सपनों को पूरा करने की तैयारी करने लगा। इस प्रोजेक्ट में उसने अपनी जिद और कौशल को साबित किया। अंततः, उसकी मेहनत और संघर्ष ने उसे प्रमोशन और सम्मान के साथ भरा मुकाम प्राप्त कराया। उसने अपने परिवार को गर्वित करने का मौका दिया, और उसकी कड़ी मेहनत ने उसे वादे को निभाने में सफलता दिलाई।

वापसी की तैयारी

एक दिन संदीप ने निर्णय लिया कि वह सब कुछ छोड़-छाड़कर गाँव जाएगा। नहीं चाहिए उसे ये पैसा ये चकाचौंध भरी जिंदगी। इंसान मशीनों की तरह दिन रात काम करता है, ना घर से निकलने का समय पता है, ना घर पर लौटने का समय एक पिता न बच्चों को समय दे पा रहा है, ना परिवार को।

उसने निर्णय लिया कि जब परिवार ही नहीं होगा तो वो ऐसे पैसे का क्या करेगा। उसने मन ही मन कहा कि भले ही पैसा कम कमा लूंगा लेकिन परिवार के साथ रहूँगा। फिर कुछ देर विचार करने के बाद याद आया की तीन-तीन बहनें हैं और एक भाई भी तो है। माँ-बाप के साथ-साथ उनकी भी तो जिम्मेदारियाँ हैं। बहनों की शादियाँ करवानी है भाई को पढ़ा लिखा कर इस लायक बनाना है कि वो दुनिया में कहीं ना कहीं एक मुकाम हासिल कर पाए। माँ-पिता की बढ़ती उम्र और घर की टपकती छत ने एक भी आँसू नहीं टपकने दिया।

फिर क्या था लड़के ने अपना मन बदला और फिर से खुद को उसी भीड़ भरी जिंदगी में गुमा दिया जिससे वो भागकर वापस गाँव जाना चाहता था लेकिन घर को कोई कैसे भूल सकता है उसने अपने बॉस से दस दिन की छुट्टियाँ लीं और घर वापस आ गया।

घर की मिठास

संदीप ने अपने परिवार के साथ बिताए इन दस दिनों के पलों का पूरा आनंद लिया। उसने महसूस किया कि गाँव की सादगी और प्यार की मिठास से बढ़कर कुछ नहीं। उसने अपने दोस्तों से मुलाकात की, पुराने खेल खेले और अपने बचपन की यादें ताजा की। उसके माता-पिता ने उसे बताया कि उन्होंने उसके भेजे पैसे से घर की मरम्मत करवाई और छोटे भाई की पढ़ाई के लिए बचत की। संदीप को गर्व महसूस हुआ कि उसकी मेहनत ने उसके परिवार की जिंदगी को बेहतर बनाया।

अंत में संदीप ने महसूस किया कि घर की याद और प्यार की मिठास को किसी भी सफलता या दौलत से नहीं तोला जा सकता। उसने अपने परिवार से वादा किया कि वह अक्सर गाँव आता रहेगा और उनकी खुशियों में शामिल होता रहेगा। संदीप की कहानी यह बताती है कि चाहे हम कितनी भी दूर चले जाएं, हमें घर की याद और प्यार हमेशा अपनी ओर खींचता है।

निष्कर्ष

संदीप की कहानी उन लाखों लोगों की कहानी है जो अपने परिवार और घर की यादों को दिल में संजोए रहते हैं। यह कहानी हमें यह सिखाती है कि सच्ची खुशियाँ और संतोष परिवार के साथ और घर की मिठास में ही हैं। चाहे हम कितनी भी उँचाईयों को छू लें, घर की याद और परिवार का प्यार हमेशा हमारे दिल में बसता है। जीवन में प्राप्त की गई हर एक सफलता सिर्फ जीवन का एक हिस्सा है लेकिन जिंदगी तो सिर्फ परिवार ही होता है।





बचपन

श्री संदीप पूनिया, लेखाकार

पिता से डरकर बचपन में वो पिटना आज भी याद है ना
माँ के आँचल में जाकर वो छिपना आज भी याद है ना।
याद है ना वो तेल लगाकर बालों की मांग निकालना भी
नहा धोकर वो मिट्टी में फिर लेटना आज भी याद है ना।
याद है ना वो गर्मी में पैपू-पैपू की आवाज भी हॉ
कुल्फी के लिए बोटलों का वो बिकना आज भी याद है ना।
याद है ना वो स्याही की दवात और स्लेट की वो बत्ती भी हॉ
अ से अनार को तख्ती पर वो लिखना आज भी याद है ना।
बिजली के चले जाने पर वो छुपम-छुपाई खेलना भी हॉ
डरते हुए उस अंधेरे में वो छिपना आज भी याद है ना।
याद है ना वो एक रुपये में संतरे की 16 टॉफियाँ भी,
शक्तिमान के स्टीकरो को चिपकाना आज भी याद है ना।
होली दीवाली तीज और त्यौहार याद है वो मेले भी
वो खेल खिलौनों के लिए रोना चीखना आज भी याद है ना।
गली में नाली के पानी में वो कागज की किशती भी हॉ
सावन की पहली बारिश में वो भीगना आज भी याद है ना।
घर में आए मेहमानों के याद है आशीर्वाद भी हॉ
जाते हुए मिले एक रुपये पर रीझना आज भी याद है ना।
स्कूल का काम ना पूरा होने पर वो भूलना कॉपी भी
मास्टर का वो कान पकड़कर खींचना आज भी याद है ना।
खेतों की वो लहलहाती फसलें होंगी याद भी हॉ
ट्यूबवेल द्वारा खेतों को वो सींचना आज भी याद है ना।

हाथ काँप रहे थे ये सोचकर इसलिए लिखा आज भी हॉ
कही भूल गया ना हो मैं बचपन लिखना आज भी याद है ना।





बेटी

श्रीमती पूनम पूनिया
पत्नी – श्री संदीप पूनिया

माँ-पिता और बेटी का प्यार ये दुनिया का एक अनूठा रिश्ता है, जो बचपन से लेकर बेटी की शादी तक अनूठा मुकाम हासिल कर लेता है और यह यात्रा केवल बेटी की शादी करने तक ही समाप्त नहीं होती बल्कि शादी के बाद भी उसका ये रिश्ता पूरी उम्र माँ-बाप दूसरे भाई-बहन से जुड़ा रहता है। दुनिया कहती है बेटियाँ तो पराई होती है लेकिन मैं तीन बहनों का भाई और दो बेटियों का पिता होने के नाते ये समझ चुका हूँ कि यह रिश्ता आपकी अंतिम साँस के साथ भी समाप्त नहीं होता।

आज के इस कलियुग में बेटों को तो फिर भी पिता की दौलत शोहरत और पिता का उपनाम मिल जाता है और ना मिले तो भी बेटे उसे किसी ना किसी तरह पिता को वृद्ध आश्रम में छोड़ लेकिन एक बेटी ही है जिसे ना ना पिता की दौलत शोहरत पिता का प्यार

बेटी के बचपन में, ही उसका सारा संसार संरक्षक, उसके शिक्षक, बड़े समर्थक होते हैं। प्यार एक तरह होता है, सांत्वना देने की कहानियों में, चुम्बनों में, और पर हंसी में होता

जैसे- होती जाती है, साथ रिश्ता वह उसका हीरो और सहनशीलता के प्यार एक मजबूत छत के के तूफानों में छाया और आश्रय

किशोरावस्था में, माँ-बेटी होता है। वे अपने-अपने राज, सपने माँ बनता है। उनका प्यार एक गर्म आलिंगन की तरह देता है।



कोर्ट कचहरी के द्वारा या माँ- कर हासिल कर ही लेते है पिता का नाम मिलता और बस मिलता है तो माँ-

उसके माता-पिता होते हैं। वे उसके और उसके सबसे माँ और बेटी का कोमल हवा की पोषणशील और वाला। यह नींद चोट लगने पर मजेदार चुटकुलों है।

जैसे बेटी बड़ी उसका पिता के मजबूत होता जाता है। बनता है, जो उसे साहस बारे में सिखाता है। उनका समान होता है, जो जीवन प्रदान करता है।

के रिश्ते में एक गहरी मित्रता का निर्माण को साझा करती हैं, जिससे एक अटूट बंधन होता है जो अनिश्चितता के समय में राहत और सांत्वना

बचपन के बंधन

बचपन से ही मां-बाप का प्यार उनकी बेटी के जीवन में एक महत्वपूर्ण भाग बनता है। शुरुआती दिनों में, बच्ची अपनी माँ की गोद में शांति और सुरक्षा की खोज करती है। माँ के प्यार का एहसास उन्हें बचपन के सुखद और निराले पलों में मिलता है, जैसे कि खिलौने से खेलना, रात को कहानी सुनना, और माँ की ममता में डूबकर नींद में खो जाना। इन पलों में, बेटी के माँ-बाप की ममता का संबंध अपनी खासियत और गहराई के साथ बढ़ता है।

बच्ची के बढ़ने के साथ, वह अपने पिता के साथ भी एक खास बंधन बनाती है। पिता उसे साहस, सामर्थ्य, और सच्चाई के बारे में सिखाते हैं। उनका प्यार उसे समझने की क्षमता देता है और उसे आत्म-विश्वास की ओर बढ़ाता है। यह संबंध जैसे दृढ़ पेड़ की तरह होता है, जो जीवन के हर परिप्रेक्ष्य में उसे सहारा और संरक्षण प्रदान करता है।

पिता और बेटी के बीच की अठखेलियाँ एक अद्वितीय और प्यार भरे संबंध की प्रतिक्रिया होती हैं। यहां कुछ ऐसी अठखेलियाँ हैं जो इस संबंध को और भी खास बनाती हैं:

1. घुड़सवारी का खेल: जब बेटी छोटी होती है और पिता उसे अपनी पीठ पर उठाकर घुड़सवारी करते हैं तो अक्सर एक पिता जितना अपनी बेटी को महसूस कर सकता है शायद ही इस दुनिया का कोई और मर्द या इंसान वो महसूस कर सके जो एक पिता और पुत्री के बीच की खास बात बन जाती है और बेटी को मज़ा भी आता है क्योंकि वह पिता के साथ समय बिताती है।

2. कहानी का समय: आमतौर पर हर पिता बेटी को नींद ना आने पर परियों की कहानियाँ सुनाते हैं। ये कहानियाँ उनकी ज़िन्दगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती हैं और बेटी को सोने की वजह मिलती है। उसके सोने के बाद पिता द्वारा बेटी के माथे पर चुंबन और बेटी के चेहरे का तेज एक पिता को यह एहसास कराता है कि बेटी भी घर की चिराग होती है और बेटियाँ ही घर रोशन कर सकती हैं।

3. खेलों का आयोजन: पिता बेटी के स्कूल में आयोजित खेलों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। हर पिता सोचता है कि वह अपनी बेटी के लिए एक मिसाल बने इसीलिए अपना जी-जान लगाकर खेल खेलते हैं और जब जीतते हैं तो उस पिता की दुनिया की तालियाँ नहीं सुनाई देती बल्कि अपनी बेटी की वो खिलखिलाती हँसी सुनाई देती है जिसे देखकर एक पिता फिर से जवान और ज़िंदा हो उठता है। यह उनके बीच की अटूट बंधन को बढ़ाता है और उनके प्रेम को मजबूत करता है।

4. खाने का खेल: जब बेटी को खाने में मन नहीं लगता, तो पिता उसे मना लेने के लिए खाने का खेल खेलते हैं। खाना लेकर उसके पीछे-पीछे दौड़ते हैं। भागते-भागते गिर जाते हैं और जोर-जोर से साँस लेने लगते हैं। बेटी को लगता है कि पिता जी को कुछ हो गया है और वो जैसे ही पास आती है पिता उसे जोर से अपनी बांहों में जकड़ लेते हैं और पिता-पुत्री दोनों हँसने लग जाते हैं। यह दोनों के बीच की मस्ती और जुड़ाव का एक महत्वपूर्ण तरीका होता है।

5. गाने और नाचने का मौका: जब घर में मेला मंच होता है, तो पिता और बेटी एक साथ गाने और नाचने का मौका लेते हैं। यह उनके बीच की ज़िन्दगी को रंगीन और आनंदमय बनाता है।

बेटी और पिता के बीच की खुशियों और खिलखिलाहट का संबंध अनवरत बढ़ता रहता है। यहां और कुछ खास अठखेलियाँ हैं:

6. कपड़े खरीदना: शायद एक पिता अपने लिए चाहे कुछ करें ना करें लेकिन अपनी बेटी के लिए वो दुनिया की सारी खुशियाँ खरीद सकता है। मैंने यह तब अनुभव किया जब मैंने पहली बार अपनी बेटी के लिए कपड़े खरीदे ऐसा लग रहा था मानो दुनिया की सारी खुशियाँ खरीद कर मेरी बेटी की अलमारी में भर दूँ और वो जब भी इसे खोले तो चारों तरफ खुशियाँ ही खुशियाँ बिखर जाए बस यही पल बेहद खास होता है।

7. गर्मियों के दिनों में ठंडी बातें: गर्मियों के दिनों में ठंडी बातें करना, बिजली के कड़कने और बारिश का इंतजार करना या फिर आम के गोले खाना भी बेटी और पिता के बीच एक अद्वितीय बंधन बनाता है।

8. बालों की सजावट: बेटी के बालों में पिता के हाथों की सजावट या उसे नए हेयरस्टाइल बनाने का प्रयास, ये सभी क्षण खास होते हैं क्योंकि शायद इस पिता ने एक भाई होते हुए या एक बेटा होते हुए अपनी बहनों या माँ के बालों को कभी भी ना बनाया हो लेकिन अगर बेटी के बाल बनाने की बात आए तो पिता की खुशी का ठिकाना नहीं रहता। यही पल एक पिता और बेटी के प्यार का एहसास दिलाते हैं।

इन सभी अठखेलियों में बेटी और पिता के बीच एक गहरा और सजीव संबंध दिखता है, जो उनके बीच की जिंदगी को रंगीन और समृद्ध बनाता है। ये छोटी-छोटी खुशियाँ और खेल पिता-पुत्री के संबंध को गहराते हैं और उन्हें यादगार बनाते हैं।

ये अठखेलियाँ न केवल मनोरंजन का स्रोत होती हैं बल्कि इन्हें बिना किसी संज्ञान के बेटी के मन को सिखाने का अवसर भी मिलता है। पिता और बेटी के बीच की इन छोटी-छोटी खुशियों का महत्व अद्वितीय होता है और यह संबंध दोनों के दिलों में अनमोल महसूस होता है।

किशोरावस्था के वर्ष और दोस्ती के बंधन

किशोरावस्था में माँ-बेटी के बीच नया संबंध बनता है - दोस्ती का संबंध। यह एक ऐसा समय होता है जब बेटी अपनी माँ को अपनी समस्याओं, सपनों, और आशाओं के बारे में बताती है। माँ उसे समर्थन और सलाह देती हैं, जिससे बेटी की समझ में सुधार होता है। यह युग माँ-बेटी के बीच एक नया संबंध बनाता है, जिसमें वे आपस में साझा करती हैं, हँसती हैं और एक-दूसरे के दिल की बातें समझती हैं।

जब बेटी शादी के मील का पत्थर छूती है, तो प्यार के दायरे एक बार फिर से बदल जाते हैं। उसके माता-पिता का प्यार, गर्व, खुशी, और कठोर संवेदना का मिश्रण बन जाता है। वे उसे एक नई यात्रा पर निकलते हुए देखते हैं, जो उन्हें उत्साहित और चिंतित होने का एक मिश्रण देती है, जानते हैं कि उनकी भूमिकाएँ बदल जाएगी, लेकिन उनका प्यार स्थिर रहेगा।

शादी में, जब पिता अपनी बेटी को मंडप तक लेकर जाते हैं, और माँ आंसुओं भरी आँखों से देखती हैं, तो उनका प्यार उसके लिए उज्ज्वल होता है। यह एक प्यार है जो सालों के साथ संघर्ष करता है, हर दिन बढ़ता है, और अब उत्सव और खुशी के साथ चमकता है, जब वे उसे अपना परिवार शुरू करते हुए देखते हैं।

बचपन से शादी तक, माता-पिता और उनकी बेटी के बीच का प्यार एक सुंदर सफर है जो विकास, समझदारी, और अटल समर्थन की ओर बढ़ता है। यह एक ऐसा बंधन है जो समय और दूरी को पार करता है, एक ऐसा बंधन जो हमेशा के लिए समर्पित है।

शादी की तैयारी

शादी के लिए तैयारी का समय बेटी और उसके माता-पिता के लिए एक अद्भुत और भावनात्मक अनुभव होता है। यह समय नई शुरुआत की ओर एक महत्वपूर्ण कदम होता है, जो उसे नए जीवन के साथ एक संबंधित और प्रेम भरा समझौता करने का अवसर देता है।

माता-पिता के लिए यह समय उनकी बेटी के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय में से एक होता है। वे अपनी बेटी को नई जिम्मेदारियों के साथ स्वागत करते हैं, जैसे की उसके शादी की तैयारी, उसके संबंधों में आगे बढ़ना, और उसकी

नई पारिवारिक स्थितियों को समझना। उनकी भावनाओं में मिलन, खुशी और अवसाद का अनुभव होता है, क्योंकि वे अपनी बेटी के खुशियों और चुनौतियों के साथ साझा करते हैं।

शादी का दिन

शादी के दिन, बेटी के मां-बाप का हृदय एक समान होता है - गर्व और खुशी का एहसास। माता अपनी बेटी को सजाती हैं और उसके हाथों में एक सुंदर मेहंदी का डिजाइन करती हैं। माता-पिता की आंखों में खुशी और गर्व की चमक होती है जब वह अपनी बेटी को मंडप तक लेकर जाते हैं। पिता के आँसू और गले में अटकी हुई आवाज में सब कुछ होता है - वह खुद नहीं समझ पाते कि उनका दिन हर पल खोता क्यों जा रहा है।

बेटी की शादी में, मां-बाप का प्यार उसके अद्वितीय यात्रा को देखते हुए नज़र आता है। वे अपनी बेटी के उत्साहित होते हुए नज़र आते हैं, जो नए जीवन के साथ एक नई शुरुआत करने को तैयार हो रही है। यह दिन माता-पिता के लिए एक अनुपम संघर्ष का भी दिन होता है, क्योंकि वे अपनी बेटी के लिए सभी तैयारियों में मग्न रहते हैं, परन्तु उन्हें खोने का भय भी होता है। इस उमंग और उदासी के मिश्रण में, मां-बाप का प्यार उसे आत्मनिर्भर बनाने की ओर बढ़ता है, जब वे उसे अपनी शादी के जीवन के लिए बद्ध करते हैं।

बेटी जब माँ बनती है, तो उसे भी अपने माँ-बाप के प्यार की अद्वितीय महत्ता का अनुभव होता है। वह समझती है कि जैसे उसके माँ-बाप ने उसे सहारा और समर्पण दिया है, वैसे ही उसे भी अपने बच्चे के लिए सभी समर्पण और स्नेह प्रदान करना होगा। इस समय माँ अपने बच्चे के साथ एक गहरा और निष्ठावान संबंध बनाती है, जो उसकी माँ की भूमिका को समझने में मदद करता है और उसे अद्वितीय महसूस करती है।

बस यही कहना चाहता हूँ कि बेटी होने पर दुःखी नहीं बल्कि खुश होना चाहिए क्योंकि भाग्यवान होते हैं वो माता-पिता जिनके घर बेटियाँ जन्म लेती हैं।





मोहब्बत भरी निगाहें

श्रीमती पूनम पूनिया
पत्नी - श्री संदीप पूनिया

न जाने कैसे लोग होंगे, जो उसकी नज़रों में आते होंगे
कितने ही खुशी से जीते होंगे, कितने ही मर जाते होंगे

दोस्तों, कुछ तो बात करो उसकी मोहब्बत भरी निगाहों की
वो जो देखते होंगे उनमें, शायद प्यार से ही मर जाते होंगे

वो जो कभी नहीं आएगा, उनसे किस जन्म के नाते होंगे,
जो आते हैं, उनका क्या, आते हैं और चले जाते होंगे

कि मैं आईना भी देखूँ तो तेरा अक्स नजर आता है
जिसे देखा नहीं जिसे मिला नहीं वो शख्स नजर आता है

नजर आता है कि दिल दिमाग के बीच एक दुविधा छिड़ गई है
दिमाग कहता है रहने दे पर दिल में तेरा पक्ष नजर आता है

लक्ष्य नजर आता है कि तुझे पाना है तुझे खोना नहीं
अब बस! तेरे हो चुके हैं और किसी का होना नहीं

रोना नहीं इस दुनिया में मेरी जान मैं जब तक जिंदा हूँ
काश हम पहले मिल जाते बस यही सोच शर्मिदा हूँ

चुनिंदा हूँ मैं उन लोगों में जो तेरे दिल को भाते हैं
तुझे सोचते हैं हम हँसते हुए बस खुशी से ही मर जाते हैं

डर जाते हैं कहीं हँसते हुए तुझे लग ना जाए मेरी नजर
बस यही तमन्ना प्रभु से मुझे मिल जाए हाँ तेरी खबर

पता नहीं तू कैसा है और होगा कहाँ किस दुनिया में
मेरी तो अब एक ही दुनिया वो भी सैंडी पूनिया में





इंटरनेट के लाभ से इंटरनेट की लत तक का सफ़र

श्री अंकित

पदनाम – लेखाकार, टीएमसी अनुभाग

इंटरनेट जो आज सम्प्रेषण का एक महत्वपूर्ण साधन है, वास्तव में यह सभी कम्प्यूटरों का एक विश्वव्यापी नेटवर्क है, कई पृष्ठों से भरा पुस्तकालय है। इंटरनेट की जड़ें सन् 1960 में यू.एस.ए. में एक रक्षा विभाग से जुड़ी मिलती हैं। मुख्य रूप से इंटरनेट की शुरुआत सूचनाओं को इंटरनेट के माध्यम से एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर तक पहुंचाने के उद्देश्य से हुई ताकि विभिन्न कम्प्यूटर्स के मध्य सम्बन्ध स्थापित किया जा सके लेकिन आज इंटरनेट जिंदगी में पूरी तरह रच बस गया। कुछ व्यक्तियों के लिए तो इंटरनेट के बिना एक दिन भी गुजारना मुश्किल हो जाता है। किसी प्रोडक्ट की जानकारी चाहिये हो या किसी विषय से सम्बन्धित प्रश्न का उत्तर, इसके माध्यम से सेकेण्डों में प्राप्त किया जा सकता है। एक क्लिक के साथ पूरी दुनिया व्यक्ति के समक्ष उपस्थित होती है। इस रूप में यदि इंटरनेट को देखा जाये तो यह बहुत लाभदायक नजर आता है। लेकिन यदि आजकल के विद्यार्थियों को देखें तो उनके माता-पिता व अध्यापकों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं से पता चलता है कि वे इसे एक मनोरंजन के साधन के रूप में देखते हैं। इसके अलावा इसके बहुत से नकारात्मक प्रभाव भी सामने आ रहे हैं। जैसे, विद्यार्थी सारे दिन फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, व्हाट्सएप और छोटी रील पर ही पूरा समय व्यतीत कर देते हैं और मनोवैज्ञानिक रूप में इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता दिखाई दे रहा है। यदि मनोविज्ञान व इंटरनेट की बात की जाये तो मनोविज्ञान वह विषय है जिसमें व्यक्ति की मानसिक प्रक्रियाओं व व्यवहार का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाता है और इंटरनेट द्वारा किये जाने वाले मुख्य व्यवहार निम्न हैं, जिनके माध्यम से संदेश, प्रदत्त, फाइल इत्यादि दूसरों तक पहुँचाई जाती है व प्राप्त की जाती है। ई-मेल, चैटिंग, फाइल भेजना, समूह बनाकर कार्य करना, वेब साईट बनाकर स्वयं को प्रस्तुत करना, सीधे वार्तालाप (वीडियो के माध्यम से) इत्यादि इसी के उदाहरण हैं।

इंटरनेट जब तक एक सहायक साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है तो यह बहुत लाभकारी तकनीक है, परन्तु यदि इसकी लत लग जाये तो यह हानिकारक रूप ले लेता है। इंटरनेट की लत व्यक्ति के गिरते आत्म विश्वास,



विषाद व अकेलेपन (डेविस 2001) का एक बड़ा कारण बन जाता है।

आखिर वह क्या है जो व्यक्ति को इंटरनेट जैसी तकनीक से लाभ उठाने के बजाय इसकी लत व इसके नकारात्मक पहलू की ओर ले जाती है। किम्बरले यंग (1997) के अनुसार इंटरनेट के तीन पहलू हैं जो सम्भवतः व्यक्ति

को इंटरनेट की लत की ओर ले जाते हैं। अज्ञानता की अवस्था, सुविधा व बचाव। जब व्यक्ति को किसी ऐसी जानकारी की आवश्यकता होती है जिसे वह दूसरों से गुप्त रखना चाहता है तो वह इंटरनेट का सहारा लेता है। वह अपने साथियों, माता-पिता इत्यादि के साथ अपने मनोभावों को साझा करता है। कुछ व्यक्ति अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के भी होते हैं जिनमें ऊर्जा का प्रवाह स्वयं की ओर होता है और समाज में स्वयं को प्रस्तुत करने से हिचकिचाते हैं, वे भी इंटरनेट को एक सुविधाजनक साधन समझते हैं जिसके माध्यम से वे अपने प्रश्नों के उत्तर आसानी से प्राप्त कर सकते हैं और इस प्रकार वे अपने मन में उठ रही दुविधा से स्वयं का बचाव कर पाते हैं और इंटरनेट को बहुत ही सुविधाजनक तकनीक मानते हैं।

इसके अलावा डेविस (2001) का मानना है कि कुछ संज्ञानात्मक लक्षण भी हैं जो व्यक्ति को इंटरनेट की लत की ओर ले जाते हैं। जैसे विषाद, निम्न आत्मसम्मान व ध्यानमग्नता। अर्थात् उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह तथ्य सामने आते हैं कि इंटरनेट को यदि एक सहायक के रूप में उपयोग किया जाये तो यह एक सुविधाजनक तकनीक है और इसका उपयोग व्यक्ति को सकारात्मक उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए करना चाहिये पर यदि व्यक्ति इंटरनेट का उपयोग मनोरंजन के साधन के रूप में परिस्थितियों से स्वयं को बचाने के लिए करता है तो यह भी हो सकता है कि व्यक्ति इंटरनेट पर स्वयं को निर्भर कर दे और उस चिंतनशीलता को कहीं खो दें, जो उसे अन्य जीवों से अलग करती है।

संदर्भ सूची

डेविस, आर.ए. (2001) ए कौगनितिव बिहेवियरल मॉडल ऑफ पैयोलोजिकल इंटरनेट चूक, यूटर इन धूमन बिहेवियर, 17, 187-95

यंग, के. (1997) वाट मेक्स ऑनलाईन यूजेज स्टिमुलेटिंग: पोटेन्शियल एमाले इंटरनेट यूज, पेपर प्रस्तुतीकरण, अमेरिकन साइकोलोजिकल एसोसिएशन के 105वें वार्षिक समारोह में शिकागो।





संभाषण कला

कुमारी सोनिया
बहन, श्री अंकित, लेखाकार
टीएमसी अनुभाग

आप सभी बहुत सी कलाओं से परिचित होंगे, जैसे- शिल्पकला, वास्तुकला, नृत्यकला, नाट्यकला, संगीतकला आदि। किन्तु क्या आप जानते हैं कि संभाषण अर्थात् वार्तालाप यानि बातचीत भी एक कला है। आपने अक्सर महसूस किया होगा कि एक व्यक्ति अपनी भाषा के व्याकरण, उच्चारण, दोषमुक्त धाराप्रवाह और मधुर शब्दों के प्रयोग से आकर्षण का केन्द्र बन जाता है जबकि दूसरा व्यक्ति जो संभाषण कला में निपुण नहीं है, उसकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं जाता है।

संभाषण की योग्यता एक ऐसा साधन है, जिसके माध्यम से हम सभी प्रकार की संगति में अपनी अमिट छाप छोड़ सकते हैं।

हमारे जीवन में सर्वाधिक प्रयोग संभाषण का ही होता है। इसके अतिरिक्त जीवन में कोई भी ऐसी विद्या, कला, कुशलता अथवा योग्यता नहीं है, जिसका लगातार इतना प्रयोग होता हो। संभाषण करने वाला व्यक्ति सभी का प्रिय बन जाता है। प्रत्येक व्यक्ति उससे वार्तालाप करने को उत्सुक रहता है।

संभाषण कला के महत्व को देखते हुए क्या आप नहीं चाहेंगे कि आपका भी संभाषण कौशल श्रेष्ठ हो, आप भी अपनी वाणी के मधुर प्रयोग से सभी व्यक्तियों के हृदय में अपने लिये स्थान बनाती। यदि आप ऐसा चाहते हैं, तो मैं आपको संवाद-कौशल को निखारने के कुछ उपाय बताती हूँ।

आप जब भी वार्तालाप करें, सदैव सत्य बोलें। याद रखें असत्य संभाषण आपको कुछ समय के लिये तो प्रसिद्धि दिला सकता है, किन्तु दीर्घकालीन अवधि में यह आपके लिये हानिकारक ही सिद्ध होगा। सदैव बहुत सोच-समझकर भावपूर्ण, अर्थपूर्ण एवं प्रेरणाप्रद बोलिए, आपकी वाणी में इतनी मधुरता होनी चाहिये कि सभी व्यक्तियों के हृदय को स्पन्दित कर सके। इसके अतिरिक्त इस बात का सदैव ध्यान रखें कि आप किस वर्ग के लोगों के साथ संभाषण कर रहे हैं यदि आप महिलाओं से बातचीत कर रहे हैं तो आपके वार्तालाप में पूर्णतः शालीनता और शिष्टता हो। किसी भी फूहड़ अथवा अनर्गल वार्तालाप से बचें। यदि आप अपने मित्रों अथवा युवा वर्ग के साथ बातचीत कर रहे हैं, तो विद्यालय, शिक्षा, वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, फैशन, कैरियर, प्रतियोगी परीक्षाओं, समाचार और समसामयिक घटनाओं पर वार्तालाप करें। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति या समूह की अवस्था और रुचि को ध्यान में रखकर ही संभाषण करें।

संभाषण करते समय जो विचार आप प्रस्तुत कर रहे हैं, वे विचार आपके आचरण में भी परिलक्षित होने चाहिये। साथ ही विचारों को प्रेषित करते समय आपकी भावमुद्रा एवं पार्श्वमुद्रा भी बिल्कुल सटीक होनी चाहिए। यह भी ध्यान रखें कि संभाषण का अर्थ केवल अपने विचारों को प्रकट करना ही नहीं बल्कि दूसरों के विचारों को सुनना, समझना और जानना भी है। यदि आप चाहते हैं कि दूसरे आप की बातों को ध्यान से सुनें, तो आप अपने साथ-साथ उन्हें भी बोलने का अवसर प्रदान कीजिये। उनके विचारों को सुनिये और फिर अपनी बातों को सुभाषित प्रकार से रखिये। संभाषण कला में पारंगत होने के लिये विषय पर आपकी पूर्ण जानकारी होना आवश्यक है। बिना विषय की जानकारी के आप कुशल संभाषण नहीं कर सकते। यदि विषय की पूर्ण जानकारी न हो, तो चुप रहना ही बेहतर है। गलत, अस्पष्ट या अधूरी जानकारी आपको सदैव हँसी का पात्र बना देगी।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यदि आप सफलता के नए आयामों को प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपका संभाषण कला में पारंगत होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रतिदिन इसका अभ्यास और कड़ी मेहनत ही सफलता के नए सोपान है।



डिजिटल भारत

श्रीमती दीप्रिया कुमारी बर्मवाल
पत्नी- श्री दीपक कुमार बर्मवाल
सहायक लेखा अधिकारी

डिजिटल भारत की अपनी एक महत्वपूर्ण पहचान है, जिसे पूरे विश्व ने माना है। यूँ तो पूरी दुनिया में भारत ने अपनी छाप सांस्कृतिक और बौद्धिक दृष्टि से पहले ही स्थापित कर चुका है, परन्तु वर्तमान समय में भारत इतना विकास किया है कि यह पूरे विश्व का नेतृत्व करने के लिये तैयार है।



डिजिटल भारत, भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य है भारत देश को डिजिटल रूप से सशक्त करना है और यहाँ के समाज और ज्ञान पर आधारित अर्थव्यवस्था को भी सशक्त करना है। आज डिजिटल

भारत ने देश के प्रायः सभी नागरिकों को एक सूत्र में पिरो दिया है। भारत सरकार की इस पहल का जो उद्देश्य है उन्हें हम निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं:-

ई- गवर्नेंस :- देश के नागरिकों को उनकी सारी सुविधाएं सहज और आसानी से प्राप्त हो, उसके लिये उन्हें किसी भी परेशानी का सामना न करना पड़े, इसके लिये भारत सरकार ने ई- गवर्नेंस जैसी व्यवस्था को प्रारंभ किया। अब सरकार की सारी योजनाओं का लाभ नागरिकों को घर बैठे- बैठे मिल जाता है। चाहे वो किसी बैंक में अकाउंट खुलवाना हो, राशन कार्ड बनवाना हो, वोटर कार्ड बनवाना हो, जन्म प्रमाणपत्र बनवाना हो या इस तरह की अन्य कई योजनाएं।



ई- व्यापार को बढ़ावा :- डिजिटल भारत का एक प्रमुख उद्देश्य यह भी है कि देश में ई- व्यापार को खूब बढ़ावा मिले और देश नई उँचाईयों को प्राप्त कर सके। आज इसी डिजिटल सुविधाओं के कारण ही अमेजन, फ्लिपकार्ट, मीसो, फार्मईजी जैसे ऑनलाइन व्यापारिक दुकानों से कोई भी व्यक्ति देश के किसी भी कोने में बैठकर देश के किसी भी जगह से कोई भी सामान खरीद सकता है वो भी कम दामों में। यहाँ तक कि दवाइयों को भी काफी कम दाम में खरीद सकते हैं। इसका लाभ यह हुआ कि देश के छोटे- छोटे दुकानदारों को भी अपने व्यापार को बढ़ाने में काफी मदद मिली।

डिजिटल साक्षरता :- डिजिटल भारत में लोगों को डिजिटल रूप में साक्षर बनाना इसका मुख्य उद्देश्य है ताकि देश का प्रत्येक नागरिक डिजिटली स्वतंत्र बन सके।

**TRAINING ON
DIGITAL LITERACY**
**डिजिटल साक्षरता
प्रशिक्षण**

ग्राम पंचायत में उच्च वेग वाली इंटरनेट सुविधा:- सरकार ने डिजिटल भारत के माध्यम से भारत के सभी ग्राम पंचायतों में उच्च वेग वाली इंटरनेट की व्यवस्था की है ताकि वहाँ के लोग देश दुनिया से जुड़े रहे।



इलेक्ट्रॉनिक सामानों का निर्माण :- देश में इलेक्ट्रॉनिक सामानों का इतना विस्तार आज जो देखने को मिल रहा है वह भी भारत सरकार के डिजिटल भारत मिशन का ही परिणाम है।

डिजिटल भारत के लाभ

डिजिटल भारत मिशन ने भारत के विकास को अद्भुत उन्नति प्रदान की है। इससे देश को अनेकानेक लाभ हुए हैं:-

रोजगार में वृद्धि :- डिजिटल भारत के तहत देश में रोजगारों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। आईटी और दूसरे डिजिटल क्षेत्रों में विकास के कारण देश में अनेक लोगों को अलग-अलग प्रकार के रोजगार मिले हैं।

सरकारी सुविधाओं की सुगमता:- भारत को डिजिटल बनाने के पीछे सरकार का मुख्य उद्देश्यों में से एक है आम नागरिकों के हाथों में सरकार द्वारा दी जाने वाली सभी सुविधाओं को बड़ी ही सुगमता से पहुँचाना। इसका परिणाम यह हुआ कि इससे देश में भ्रष्टाचार के ऊपर नियंत्रण लगा और लोग ज्यादा से ज्यादा लाभान्वित हुए।

चिकित्सा के क्षेत्र में परिवर्तन:- पहले यदि लोगों को कोई चिकित्सकीय परामर्श किसी अच्छे चिकित्सक से लेनी होती थी तो उन्हें उस चिकित्सक के पास जाना पड़ता था और यदि वह चिकित्सक काफी दूर रहता था तो रोगी को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। लेकिन अब हम किसी भी चिकित्सक का परामर्श हम घर बैठे-बैठे कहीं भी ले सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन :- शिक्षित व्यक्ति से ही एक स्वस्थ और विकसित राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है। आज व्यक्ति घर पर बैठकर संसार के किसी भी शिक्षक से पढ़ाई कर सकता है। आज विद्यार्थी घर पर से ही अपने कंप्यूटर या मोबाइल पर कोई भी कक्षा कर सकता है, किसी भी प्रतियोगिता की पढ़ाई कर सकता है, किसी भी विषय के बारे में आसानी से जानकारीयाँ निकाल सकता है।



सीमितता को असीमितता में बदलना :- इसका तात्पर्य है कि पहले मनुष्य के पास किसी भी चीज़ के बारे में जानने की इच्छाएं तो असीमित थीं परंतु माध्यम लिमिटेड जिसे डिजिटल भारत ने इस सीमितता को असीमितता में बदल दिया है।

डिजिटल भारत की कमियाँ:- हालाँकि डिजिटल भारत ने देश को विकास के पथ पर काफी आगे बढ़ाया है परंतु फिर भी इस पथ पर अनेक ऐसी कमियाँ हैं जो सरकार की इस योजना को पूरी तरह से सफल नहीं होने दे रहे हैं। एसोचैम की एक रिपोर्ट के अनुसार- नीतियों में अस्पष्टता और ढाँचागत कठिनाइयों के कारण महत्वाकांक्षी डिजिटल भारत परियोजना का सफल कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के मामले में अनेक चुनौतियाँ हैं। इन कमियों को हम अधोलिखित रूप में जान सकते हैं:-

साइबर असुरक्षा :- डिजिटल भारत के मार्ग में सबसे बड़ी चुनौती है साइबर कंपनियों की सुरक्षा में कहीं न कहीं, कोई न कोई कमी जरूर है जिसके कारण हमेशा नागरिकों की निजी जानकारीयाँ कभी-कभी गलत हाथों में चली जाती है और लोगों को इससे काफी नुकसान हो जाता है।

नेटवर्क कनेक्टिविटी की समस्या :- भले ही भारत डिजिटलाइजेशन की तरफ काफी तीव्रता से आगे बढ़ रहा है परंतु इसके बीच में नेटवर्क की यह समस्या इसके मार्ग में एक बहुत बड़ी समस्या के रूप में खड़ी है। अतः भारत सरकार को पहले इस समस्या को सुलझाने की ओर ध्यान देना चाहिये तब जाकर डिजिटल भारत के सपने को साकार किया जा सकता है।

डिजिटल कौशल की कमी :- किसी भी योजना को सफल बनाने के लिये सबसे पहले जरूरी होता है उसे सफल बनाने वाले कौशल और निपुण व्यक्ति, जिसकी इस देश में अभी काफी कमी है। यही कारण है कि 2019 में 53% भारतीय व्यवसाय नई नियुक्तियों में असमर्थ रहे थे। अतः पहले इस चुनौती को खत्म करना होगा तब जाकर डिजिटल भारत के सपने को पूरा किया जा सकता है।

निजी संस्थानों के शिक्षा के गुणवत्ता के मानक :- भारत में ऐसे निजी इंजीनियरिंग संस्थानों की संख्या अधिक है जिनका मकसद केवल लाभ कमाना होता है, उन्हें शिक्षा की गुणवत्ता से कोई सरोकार नहीं होता है। ऐसे कॉलेज अपने यहाँ अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित नहीं करते हैं। सरकार को पहले चाहिये कि ऐसे संस्थानों पर पहले अंकुश लगाए और ऐसे नियम बनाये जिससे ऐसे कॉलेज अपनी शिक्षा की गुणवत्ता को सुधार सके।

डिजिटल भारत की पहल ने देश को प्रगति की ओर ले जाने के लिये एक नई दिशा दी है और इसके लिये सरकार ने अनेक सराहनीय कदम भी उठाये हैं। हालाँकि इसमें अनेक समस्याएं और चुनौतियाँ हैं मगर सरकार इन समस्याओं और चुनौतियों को दूर करके डिजिटल भारत के सपने को साकार कर सकती है।





परिवार

श्री दीपक कुमार बर्मवाल
सहायक लेखा अधिकारी

परिवार अर्थात् समाज का अस्तित्व। एण्डरसन नामक एक समाजशास्त्री का कहना है कि हमारे जीवन में परिवार का महत्व इसी बात से स्पष्ट हो जाता है कि हममें से कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो किसी न किसी परिवार का सदस्य न हो।

परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रक्त, अथवा गोद लेने के संबंध द्वारा संगठित होता है और एक छोटी सी गृहस्थी का निर्माण करता है। एक इंसान का परिवार उसके लिए संसार होता है और वह परिवार की सहायता से ही जीवन में कुछ भी प्राप्त करता है।

परिवार का क्या अर्थ होता है इस पर लैटिन शब्द FAMULUS से काफी स्पष्ट होता है। FAMULUS का अर्थ होता है 'सेवक' अथवा 'सेवा करने वाला'।

परिवार की विशेषताएं

परिवार अपनी निम्नलिखित विशेषताओं के कारण काफी प्रभावशाली और महत्वपूर्ण है :-

- 1. भावनात्मक आधार** – यह एक ऐसी विशेषता है जिसके कारण परिवार के सभी सदस्य एक – दूसरे से बंधे रहते हैं। यथा पति-पत्नी का संबंध, माँ का लाड़-प्यार, पालन-पोषण की समुचित व्यवस्था और पिता द्वारा दी गयी सुरक्षा परिवार की कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जिनके कारण परिवार के सभी सदस्यों में आपस में प्यार और सहयोग रहता है और परिवार सुख शांति तथा सद्भावना का केंद्र बन जाता है।
- 2. समूह रसोई** – ऐसा माना जाता है कि प्रेम का रास्ता पेट से होकर गुजरता है और यह रास्ता तभी सहज बन पाता है जब भोजन पौष्टिक और स्वादिष्ट हो। परिवार की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि यहाँ पर रहने वाले सभी लोगों की रसोई एक ही होती है जिससे लोगों के बीच की तादात्म्यता बनी रहती है और वे सब एक सूत्र में बंधे रहते हैं।
- 3. सामाजिक नियंत्रण** – यह परिवार की काफी महत्वपूर्ण विशेषता है क्योंकि यदि इस नियंत्रण का अभाव यदि परिवार में रहता है तो परिवार के सदस्यों का अधोपतन निश्चित है। किसी भी प्रकार का सामाजिक संबंध हो, सामाजिक रीति-रिवाज हो, धार्मिक कर्मकांड हो या शिक्षा पद्धति हो, उनमें सामाजिक नियंत्रण द्वारा ही किसी भी व्यक्ति के जीवन को नियमित किया जा सकता है।
- 4. रचनात्मकता** - इसका मतलब है परिवार के सदस्यों के कार्यों का परिवार के दूसरे सदस्यों के रचनात्मक शक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है। हम परिवार के सदस्यों से यह आशा रखते हैं कि वे ऐसे कार्य करें जिनसे उसका सर्वांगीण विकास हो, लेकिन उसके लिये हमें भी यह चाहिये कि हम भी उसके सामने वैसा ही उदाहरण प्रस्तुत करें।

पहले परिवार के सदस्यों के पास एक-दूसरे के लिये काफी समय होता था। एक-दूसरे के साथ समय बिताना, घूमना-फिरना उनकी दिनचर्या थी, किंतु क्या आज हमारे पास अपने परिवार के लिये समय है। आज हम अपने आपको आधुनिक मानते हैं और पूरा समय आधुनिक यंत्रों यथा मोबाइल फोन, टेलीविजन के साथ बिताते हैं। परिणाम यह होता है कि हमारे बच्चे हमारे नियंत्रण में नहीं रहते हैं। वे भी उन्हीं यंत्रों के आदी हो जाते हैं और उनका मानसिक और सामाजिक विकास नहीं हो पाता है।

परिवार के प्रकार के आधार

- सत्ता के आधार पर,
- आकार के आधार पर,
- विवाह के आधार पर और
- स्थान के आधार पर

सत्ता के आधार पर परिवार के प्रकार –

1) मातृ-सत्तात्मक परिवार - इसका आशय है जहाँ माता का महत्व पिता से अधिक हो। इसमें परिवार की शक्ति एक स्त्री के हाथों में होती है और परिवार के सभी सदस्यों को उनकी बात माननी पड़ती है। इस तरह के परिवार में विवाह के बाद पुरुष को ही स्त्री के घर में जाना पड़ता है हालाँकि यह प्रथा आज-कल कहीं-कहीं और किसी खास जाति समुदाय में यथा खासी, गारो और केरल के नायर जाति आदि में ही देखने को मिलती है।

2) पितृसत्तात्मक परिवार - मातृ-सत्तात्मक का ठीक विपरीत होता है पितृसत्तात्मक परिवार। इसमें पिता ही परिवार का प्रमुख होता है और परिवार के सभी सदस्यों को उनकी ही बात माननी पड़ती है। इस तरह के परिवार में विवाह के बाद स्त्री को पति के घर जाना पड़ता है और समाज में इसी प्रथा का ही सामान्य रूप में प्रचलन है।

आकार के आधार पर

आकार के आधार पर परिवार को एकल परिवार और संयुक्त परिवार के रूप में बाँटा जा सकता है।

1. एकल परिवार – एकल परिवार जिसे एकाकी परिवार या केंद्रीय परिवार भी कहा जा सकता है आज के इस वर्तमान युग में एक सामान्य सी बात बन गयी है। इसका एक प्रमुख कारण है मनुष्य की असीमित आवश्यकताएं और इच्छा। इस प्रथा में औद्योगीकरण और शहरीकरण का भी अलग व महत्वपूर्ण स्थान है। इस परिवार में पति- पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे ही रहते हैं और साधारणतः विवाह के बाद बच्चे भी अलग हो जाते हैं।

2. संयुक्त परिवार - भारत देश की वास्तविकता भारत के संयुक्त परिवार से ही है। जब परिवार में पति- पत्नी और उनके अविवाहित बच्चों के अलावा और भी दूसरे लोग जैसे चाचा, चाची, ताऊ, उनके बच्चे, दादा, दादी आदि लोग भी रहते हैं और उनकी रसोई भी एक रहती है तो ऐसे परिवार को संयुक्त परिवार कहा जाता है। ऐसे परिवार में धन अर्जन करने का साधन भी आनुवंशिक होता है और उनके द्वारा अर्जित की हुई धनराशि परिवार के सामान्य कोष में जमा होती है। ऐसे परिवार की प्रकृति सामाजिक होती है। ऐसे परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक होती है, लेकिन ये जरूरी नहीं कि परिवार के सदस्यों के बीच आपस में रक्त संबंध ही हो। रक्त संबंध के अलावा भी दूसरे लोग इसके सदस्य हो सकते हैं।

विवाह के आधार पर परिवार के प्रकार

इस आधार पर परिवार निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं –

1. एक विवाही परिवार :- ये एक प्रकार से एकल परिवार का ही हिस्सा होता है। जैसा कि नाम से ही विदित होता है कि इसमें सिर्फ एक ही विवाह की अनुमति समाज और कानून से प्राप्त होता है अर्थात परिवार के किसी भी सदस्य को दूसरा विवाह करने की अनुमति तब तक नहीं मिलती जब तक कि पहले जीवन साथी की मृत्यु नहीं हो जाती अथवा उनमें तलाक नहीं हो जाता। ऐसे ही परिवार के सदस्यों का जीवन सुख और शांति के साथ बीतता है।

2. बहुपति विवाह - इस विवाह में एक स्त्री अनेक पुरुषों के साथ विवाह करती है। यदि सभी पतियों का आपस में संबंध भाई का हो तो उसे भ्रातृ बहुपति विवाह कहते हैं और यदि उनमें कोई रक्त संबंध न हो तो उन्हें अभ्रातृ बहु विवाह कहते हैं। यद्यपि इस विवाह का प्रचलन समाज में न के बराबर है फिर भी भारत के कुछ जनजातियों जैसे कि टोडा, खस, कुसुम्ब और नायर आदि में इस विवाह का प्रचलन देखने को मिलता है। ऐसे परिवार मातृस्थानीय होते हैं और उन स्थानों में ज्यादा होती है जहाँ स्त्रियों की संख्या पुरुषों की तुलना में बहुत कम होती है या कमाई के साधन बहुत ही कम होते हैं।

3. बहु पत्नी विवाह - यह बहुपति विवाह से विपरीत होता है। ये पितृस्थानीय या पितृवंशीय परिवार होते हैं जिसमें पुरुषों का स्थान स्त्रियों की अपेक्षा काफी अच्छी होती है। हालाँकि जनजाति समाजों के साथ-साथ सभ्य समाजों में भी काफी पाया जाता है।

स्थान के आधार पर परिवार के प्रकार

1. नवस्थानिय परिवार - इसमें विवाह के तुरंत बाद या कुछ समय बाद ही नवदम्पति अपने लिये नया परिवार बना लेते हैं।

2. मातुलेय परिवार - ये एक प्रकार से मातृ सत्तात्मक परिवार होते हैं लेकिन परिवार के व्यावहारिक अधिकार स्त्री के भाई के हाथों में होते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परिवार के कार्य

प्राचीन समय में परिवार को समाज और व्यक्ति के जीवन की मौलिक इकाई कहा जाता था। किंतु आज परिवार के महत्व को काफी सीमित कर दिया गया है और लोग इसके वास्तविक महत्व को भूलते जा रहे हैं। वर्तमान समय में परिवार के कार्यों में क्या-क्या बदलाव हुए हैं उन्हें हम इस तरह देख सकते हैं :-

- **सामाजिक कार्यों में बदलाव** - पहले हम अपने बच्चों को अपनी परम्परा और संस्कृति की शिक्षा देते थे और उन्हें संस्कारी बनाने की कोशिश करते थे किंतु आज हम इतने व्यस्त हो गये हैं कि बच्चों को उनके बारे में बताना तो दूर, हम उन्हें समय ही नहीं दे पाते हैं। परिणाम यह हो रहा है कि हमारी आने वाली पीढ़ी मतलबी और स्वार्थलोलूप बनते जा रही है जिससे हमारा समाज नष्ट होते जा रहा है।

- **आर्थिक कार्यों में परिवर्तन** - पहले समाज में परिवार ही लोगों के कार्यों का बँटवारा करता था अर्थात् परिवार का कौन सा सदस्य क्या काम करेगा यह परिवार ही बताता था और सदस्यों द्वारा कमाये हुए धन को किस तरह से उपयोग किया जाये यह भी परिवार ही निर्धारित करता था और परिवार के सदस्यों की आर्थिक आवश्यकताएं पूरा भी करता था। लेकिन आज स्वार्थ और निजी संपत्ति की लोलुपता में काफी वृद्धि हुई है। जिस सदस्य के पास सबसे अधिक धन-संपत्ति होगी, उसका परिवार में उतना ही दबदबा होगा।

- **धार्मिक कार्यों में परिवर्तन** - पहले परिवार का आधार धार्मिक कर्मकांड ही होता था। जो भी धार्मिक कार्य किया जाता था वह परिवार के द्वारा ही करना आवश्यक समझा जाता था। किंतु आज इसका महत्व काफी कम हो गया है। उदाहरण के लिये जहाँ पहले विवाह केवल परिवार द्वारा धार्मिक कर्मकांडों के माध्यम से ही करवाया जाता था वही अब यह परिवार के बाहर विवाह अधिकारी (COURT MARRIAGE) के सामने होने लगा है।

इस तरह हम देखते हैं कि यद्यपि परिवार के कार्यों के दायरे भले ही सीमित हो गये हैं किंतु इसके महत्व को आज भी हम कम नहीं आंक सकते हैं। BURGESS और LOCKE समाजशास्त्रियों के अनुसार 'परिवार के स्नेह संबंधी कार्यों को देखते हुए सुरक्षित रूप से यह भविष्यवाणी की जा सकती है कि परिवार सदैव जीवित रहेगा और व्यक्तित्व के विकास में रचनात्मक सहयोग देता रहेगा।



प्रौद्योगिकी और गोपनीयता के अधिकारों का संगम: एक जटिल और विकसित हो रहा संबंध

श्री विशाल कुमार सिंह, लेखाकार

आज के डिजिटल युग में, प्रौद्योगिकी हमारे जीवन के हर पहलू में व्याप्त है। हम संवाद करने, जानकारी प्राप्त करने, खरीदारी करने, मनोरंजन करने और यहां तक कि काम करने के लिए इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों पर निर्भर रहते हैं। इस बढ़ती हुई निर्भरता के साथ, हमारी व्यक्तिगत जानकारी का संग्रह, उपयोग और साझाकरण भी बढ़ रहा है। यह प्रवृत्ति हमारे गोपनीयता के अधिकारों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है, जो हमारे व्यक्तिगत जीवन को अवांछित हस्तक्षेप से मुक्त रखने का अधिकार है।

गोपनीयता के अधिकारों का महत्व

गोपनीयता हमारे व्यक्तिगत जीवन को नियंत्रित करने और अपने विचारों, भावनाओं और जानकारी को दूसरों के साथ साझा करने के बारे में निर्णय लेने की हमारी क्षमता के लिए आवश्यक है। यह हमें सुरक्षा और स्वतंत्रता की भावना प्रदान करता है, और यह हमें भेदभाव, उत्पीड़न और अन्य हानियों से बचाने में मदद करता है।

उदाहरण:

स्वतंत्र अभिव्यक्ति: गोपनीयता हमें बिना किसी डर या दबाव के अपनी राय और विचार व्यक्त करने की अनुमति देती है।

धार्मिक विश्वास : गोपनीयता हमें अपनी पसंद के धर्म का पालन करने और अपनी धार्मिक प्रथाओं में भाग लेने की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

व्यक्तिगत संबंध : गोपनीयता हमें अपने व्यक्तिगत संबंधों को निजी रखने और दूसरों के हस्तक्षेप से बचाने की अनुमति देती है।

प्रौद्योगिकी के प्रभाव

प्रौद्योगिकी ने हमारे गोपनीयता के अधिकारों को कई तरह से प्रभावित किया है। कुछ मामलों में, प्रौद्योगिकी ने गोपनीयता को बढ़ाने में मदद की है। उदाहरण के लिए, एन्क्रिप्शन और सुरक्षा सॉफ्टवेयर हमारी व्यक्तिगत जानकारी को अनधिकृत पहुंच से बचाने में मदद कर सकते हैं।

उदाहरण:

एन्क्रिप्टेड संचार : एन्क्रिप्शन तकनीक हमें ऑनलाइन संचार करते समय अपनी बातचीत को निजी रखने में मदद करती है।

गोपनीयता सेटिंग्स : सोशल मीडिया और अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म हमें यह नियंत्रित करने की अनुमति देते हैं कि कौन हमारी व्यक्तिगत जानकारी देख सकता है।

हालांकि, प्रौद्योगिकी ने गोपनीयता के लिए कई नए खतरे भी पैदा किए हैं। डेटा संग्रह और विश्लेषण के नए तरीकों ने कंपनियों और सरकारों को पहले से कहीं अधिक हमारी व्यक्तिगत जानकारी एकत्र करने और उपयोग करने की अनुमति दी है। सोशल मीडिया और अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने हमारे जीवन के बारे में जानकारी साझा करना आसान बना दिया है, जिससे यह दूसरों के लिए हमारी गोपनीयता का उल्लंघन करना आसान हो गया है।

उदाहरण:-

ऑनलाइन ट्रेकिंग : कंपनियां हमारी ऑनलाइन गतिविधियों को ट्रैक करने और हमारे बारे में डेटा इकट्ठा करने के लिए कुकीज़ और अन्य तकनीकों का उपयोग करती हैं।

डेटा उल्लंघन : हैकर्स कंप्यूटर सिस्टम में घुसपैठ करके और संवेदनशील जानकारी चोरी करके हमारी गोपनीयता का उल्लंघन कर सकते हैं।

गुप्त निगरानी : सरकारें अपनी नागरिकों की गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकती हैं।

गोपनीयता के अधिकारों की रक्षा करना

हमारी व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा के लिए, हमें अपनी गोपनीयता के अधिकारों के बारे में जागरूक होना चाहिए और उन्हें बचाने के लिए कदम उठाने चाहिए। हम निम्नलिखित कार्य करके ऐसा कर सकते हैं:

अपनी गोपनीयता सेटिंग्स समायोजित करें : सोशल मीडिया और अन्य ऑनलाइन खातों में अपनी गोपनीयता सेटिंग्स की सावधानीपूर्वक समीक्षा करें और यह सुनिश्चित करें कि केवल वही व्यक्ति आपकी जानकारी देख सकते हैं जिन्हें आप उन्हें देखने की अनुमति देना चाहते हैं।

मजबूत पासवर्ड का उपयोग करें और उन्हें नियमित रूप से बदलें।

सावधान रहें कि आप ऑनलाइन क्या साझा करते हैं। एक बार इंटरनेट पर डेटा साझा हो जाने के बाद, इसे पूरी तरह से हटाना मुश्किल हो सकता है।

गोपनीयता-केंद्रित उपकरणों और सेवाओं का उपयोग करें। कई कंपनियां अब गोपनीयता-केंद्रित ब्राउज़र, ईमेल सेवाएं और अन्य उपकरण प्रदान करती हैं।

कानूनी और नियामक ढांचे

सरकारों की भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि प्रौद्योगिकी कंपनियां उपभोक्ताओं की गोपनीयता का सम्मान करती हैं। ऐसा करने के लिए, कई देशों ने डेटा सुरक्षा कानून लागू किए हैं जो कंपनियों को यह विनियमित करते हैं कि वे व्यक्तिगत डेटा कैसे एकत्र, उपयोग और साझा कर सकती हैं।

उदाहरण : यूरोपीय संघ का जनरल डेटा प्रोटेक्शन रेगुलेशन (जीडीपीआर) एक ऐसा कानून है जो यूरोपीय संघ के नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा करता है। यह कंपनियों को डेटा सुरक्षा अधिकारियों को नियुक्त करने, डेटा उल्लंघनों की रिपोर्ट करने और व्यक्तियों को यह जानने का अधिकार देता है कि उनके बारे में डेटा कैसे एकत्र और उपयोग किया जा रहा है। इसी तरह, भारत सरकार का डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 डेटा संरक्षण विधेयक सुनिश्चित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

हालांकि, मौजूदा कानून हमेशा तकनीकी विकास के साथ नहीं चल पाते हैं। तेजी से बदलती प्रौद्योगिकी के युग में, नियामकों को यह सुनिश्चित करने के लिए निरंतर काम करना चाहिए कि उनके कानून व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा के लिए पर्याप्त मजबूत हों।

भविष्य की दिशा

प्रौद्योगिकी और गोपनीयता के बीच संबंध लगातार विकसित हो रहा है। भविष्य में हमें नई तकनीकों के उभरने के साथ-साथ गोपनीयता के अधिकारों की रक्षा के लिए नए समाधान खोजने की आवश्यकता होगी। कुछ संभावित दिशाएँ इस प्रकार हैं:

डेटा स्वामित्व मॉडल : भविष्य में, हम ऐसे मॉडल देख सकते हैं जो व्यक्तियों को उनके डेटा का स्वामित्व और नियंत्रण प्रदान करते हैं। यह व्यक्तियों को यह चुनने की अनुमति देगा कि उनकी जानकारी कैसे एकत्र, उपयोग और साझा की जाती है।

गोपनीयता-संरक्षित प्रौद्योगिकियां : शोधकर्ता ऐसी प्रौद्योगिकियां विकसित कर रहे हैं जो डेटा को अज्ञात करते हुए विश्लेषण करने की अनुमति देती हैं। इसका मतलब यह हो सकता है कि हम अभी भी डेटा से मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकें, जबकि व्यक्तिगत गोपनीयता की रक्षा भी कर सकें।

सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना : हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि लोग अपनी गोपनीयता के अधिकारों के बारे में जागरूक हों और प्रौद्योगिकी का उपयोग करते समय उन्हें कैसे सुरक्षित रखें।

प्रौद्योगिकी और गोपनीयता के बीच संबंध जटिल है और लगातार विकसित हो रहा है। प्रौद्योगिकी हमारे जीवन को कई तरह से बेहतर बना सकती है, लेकिन यह हमारी गोपनीयता के अधिकारों के लिए भी खतरा पैदा कर सकती है। एक संतुलन बनाना जरूरी है जो हमें प्रौद्योगिकी के लाभों का आनंद लेने की अनुमति देता है, जबकि हमारी गोपनीयता की भी रक्षा करता है। यह व्यक्तियों, कंपनियों और सरकारों के संयुक्त प्रयासों से ही हासिल किया जा सकता है।





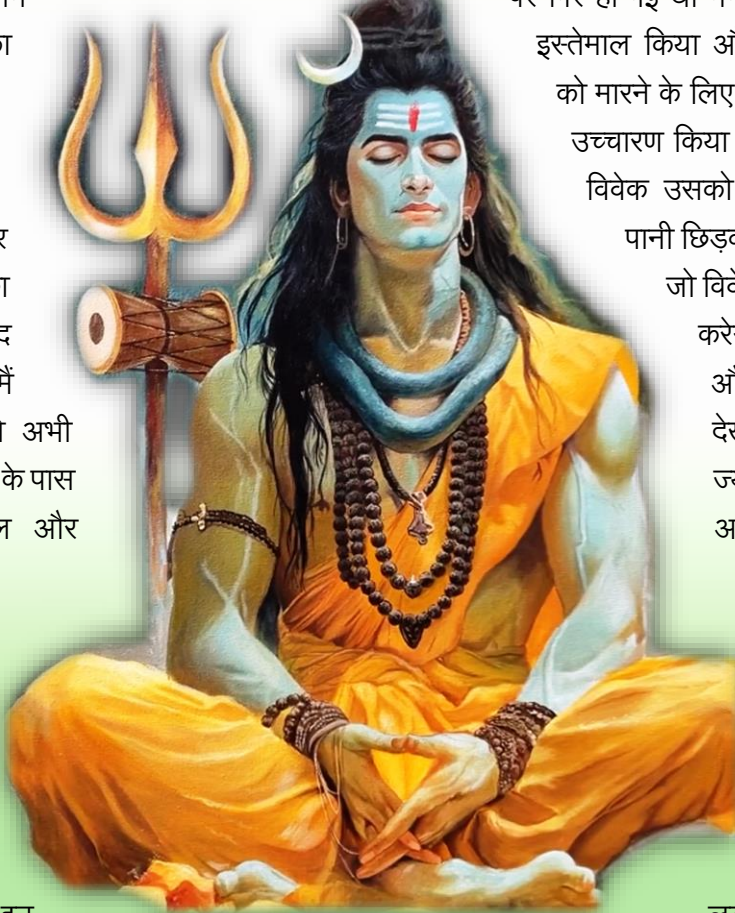
भोलेनाथ - भाग-1

अध्याय-2

सुयोग सूर्य मिश्र
अतिथि रचनाकार

चित्रगुप्त का मंत्र याद रख के वीरभद्र वापस पृथ्वी पर चला जाता है। वह पहले अपने प्रिय मित्र विवेक को ठीक करने जाता है। वह देखता है कि विवेक वहाँ पर एक इंसान का खून कर रहा होता है। वह उस इंसान को चाकू मारने वाला ही होता है कि वीरभद्र अपनी नीरशीत विद्या की मदद से बर्फ का हाथ बनाकर विवेक के हाथ को जकड़ लेता है और उस इंसान को वहाँ से हटाता है। विवेक वीरभद्र पर भी हमला करता है लेकिन उससे पहले वीरभद्र उसपर वह मंत्र का इस्तेमाल करता है और विवेक शांत हो जाता है और वह फिर से पहले जैसा अच्छा हो जाता है। “वीर ये तू है? ये सब क्या हो गया भाई? मुझे हो क्या गया था?” विवेक वीरभद्र से पूछता है। वीरभद्र के आँखों में खुशी के आँसू आ जाते हैं और वह जाकर विवेक के गले लग जाता है। “हाँ भाई यह मैं हूँ, चल हम लोग पहले चलकर राधिका को ठीक करते हैं, फिर अभिरूप और आखिरी में वैष्णवी को ठीक कर लेंगे।” वीरभद्र कहता है। वह अपनी दूसरी दोस्त को ठीक करने गया।

उसने रास्ते में विवेक को सब कुछ बता दिया। जब वह राधिका को ठीक करने गया तब उसने देखा कि राधिका को कोई छत से फेंक दिया। राधिका जमीन वायुवान विद्या का राधिका अब वीरभद्र ने उस मंत्र का हो गई। वीरभद्र और वीरभद्र ने उसपर से वही सवाल पूछा “चल तू हमारी मदद कुछ बात कर पूछा। “मैं इस हालत में? तूने अभी तो पता है कि नारियों के पास चल स्वर्गलोक चल और राधिका कहती है। हटाने का मंत्र इसमें पाप कूट- है। मैंने बोला था फूंक कर लो ये हम लोग करते हैं और हम कुछ करते हैं। इन शॉपिंग, मेकअप और ऐश मौज में मर्द ही करे। चल यहाँ से। विवेक ताना मरते हुए कहता है। “ओए तू तो चुप ही रह और राधिका। तुम्हारी सबसे फालतू



रही होती है। उस औरत ने राधिका को छत से फेंक पर गिर ही गई थी मगर वीरभद्र ने वहाँ अपनी इस्तेमाल किया और उसे वही रोक दिया। को मारने के लिए आ रही थी मगर वीरभद्र उच्चारण किया और राधिका वहीं बेहोश विवेक उसको छत पर ले गए। वहाँ पानी छिड़का। राधिका ने भी वीरभद्र जो विवेक ने वीरभद्र से पूछा था। करेगी?” वीरभद्र ने उसे सब और तेरी मदद और वो भी देखा न क्या हुआ और तुझे ज्यादा शक्ति नहीं होती है। आराम करना वहीं पो” “देखा वीरू देखा पाप फूंकने के बाद भी कूट कर भरा हुआ इसपे जितनी झाड़ नहीं मानेगी। चल अभिरूप को ठीक तीनों ही मिलकर लड़कियों को तो सिर्फ ही मन लगता है और बाकी सब काम

बात यह है कि तुम खुद नारी होकर नारी-शक्ति का अंदाजा नहीं लगा सकती हो और मैं यहाँ तुम लोग को ठीक करके, कलिपुरुष को हरा के पाप खत्म करने आया हूँ। अब चलो और लोगों को ठीक करके एक टीम बनाते हैं। वीरभद्र कहता है। वीरभद्र जल्दी से और लोगों को ठीक करके उन्हें समझा कर एक टीम बना देता है। “ओ वीरभद्र! टीम तो हमारी बन गई अब इसका नाम क्या रखें?” अभिरूप वीरभद्र से पूछता है। “इसका नाम . ‘जग के रक्षक?’ नहीं-नहीं, हाँ मुझे जिन्होंने चुना मैं तो उनका ही नाम रखना चाहूँगा” वीरभद्र कहता है। “कौन है वो?” सबने पूछा। “वो है भगवान शिव और हमारी टीम का नाम उनके ही एक नाम पर होगा, जो है भोलेनाथ।” वीरभद्र कहता है। सबको यह नाम पसंद आया। वीरभद्र स्वर्गलोक ले जाता है वहाँ वह उन लोगों को गुरु प्रकिताचार्य से मिलवाया। “तुम उन्हें ले आए वीरभद्र। मैं हर एक को सिर्फ एक विद्या ही सिखा पाऊँगा। वैसे पाँच लोग हैं और पाँच विद्याएं तब तो मैं सबको एक विद्या सिखा दूँगा और तुम्हें सारी विद्याएं सिखा दूँगा”, गुरु प्रकिताचार्य ने कहाँ। वह सबको विद्या सिखाने लगते हैं।

कुछ दिनों बाद चित्रगुप्त को यह खबर मिलती है कि शुक्राचार्य शितलपवनमणी को लेने की तैयारी हो चुकी है और वह अरुण (Uranus) ग्रह पर जाने वाला होता है। चित्रगुप्त टीम भोलेनाथ को तैयार करते हैं और उन्हें अंतरिक्ष श्वास यंत्र देते हैं ताकि वह अंतरिक्ष में सांस ले पाए। कुछ देर बाद चित्रगुप्त उन सबको शुक्र ग्रह की तरफ विष्णुपद यान से रवाना किया।

“हम लोगों को शुक्र ग्रह पहुँचने में कम से कम पृथ्वी के 2 दिन लगेंगे और शुक्राचार्य वहाँ पृथ्वी 4 दिन बाद निकलने वाला है तो हमारे पास पृथ्वी के 2 दिन का अधिक समय है।” वीरभद्र कहता है। कुछ देर बाद उनका विष्णुपद यान हिलने लगता है। वह सब देखते हैं कि वहाँ एक बड़ा हाथ उन्हें पकड़ हुआ है। वह इतना बड़ा था कि वे लोग उनका चेहरा भी नहीं देख पा रहे थे। विवेक ने अपना कद बढ़ा दिया और उसका चेहरा देखा। वह कालदानव था जो शुक्र ग्रह की रक्षा कर रहा था। “आप यहाँ क्या कर रहे हैं कालदानव? आप जैसे उच्च कोटी के दानव इस शुक्राचार्य जैसे तुच्छ गुरु के सामने आप जैसे सर्वशक्तिशाली उसकी रक्षा क्यों कर रहे हैं?” विवेक उसे बहकाते हुए कहता है। “बात तो सही है मनुष्य लेकिन मैं भविष्य देख सकता हूँ और मुझे पता था कि तुम लोग आने वाले हो इसलिए मैंने सारी तैयारी करके रखी थी और हाँ तुम्हें क्या लगता है मैं तुम्हारी इन बातों से बहक जाऊँगा? कभी नहीं।” यह कहते ही कालदानव विवेक पर अपने बड़े नाखूनों से विवेक को पंजा मारता है। विवेक वापस जाकर विष्णुपद यान में गिर जाता है। अभिरूप और वीरभद्र ने आग और पानी का हमला किया लेकिन उसको कुछ नहीं हुआ। वैष्णवी ने अपनी वाणी शक्ति से उसे बेहोश करने को चाहा मगर वह भी उसका कुछ बिगाड़ नहीं पाई। उनको उससे लड़ने में बहुत दिक्कत होती है। उन्होंने अग्नि, जल, पवन, वाणी, बर्फ आदि शक्तियों का इस्तेमाल किया। कालदानव थोड़ा कमजोर जरूर हो जा रहा था मगर वह समय-समय पर अपने आपको ठीक करते जा रहा था। उसके ऊपर जो हमला होता वह उसको अपने अंदर समा लेता और अपनी शक्तियों में मिला लेता फिर उससे वह और ज्यादा शक्तिशाली हो जाता। “दोस्तों अगर हमें इसे हराना है तो इसे हमें अपने सारी शक्तियां देनी होगी। राधिका अपनी बात उन्हें अच्छे से समझा देती है। यह सब वही करने वाले हैं जो हनुमान जी और बाली के युद्ध में हुआ था। वह सब अपनी सारी शक्ति लगाकर उस राक्षस के सोने की मणि के केंद्र में मार रहे थे। राक्षस का शरीर फटने लगता है। अंत में उन सबने अपनी शक्तियों को एक करके हमला करते हैं फिर राक्षस पूरा फट जाता है।

उन लोगों को खबर मिलती है कि शुक्राचार्य वहाँ से निकल गया है। वह जल्दी अरुण पर गए वहाँ उन्हें शुक्राचार्य मणि लेते हुए दिखता है वीरभद्र अपनी सारी शक्तियां मिलाकर एक ऊर्जा का गोला बनाता है और शुक्राचार्य पर फेंक देता है। शुक्राचार्य वहीं पर मूर्छित पड़ जाता है और उसके हाथ से शितलपवनमणी छूट जाती है। अभिरूप मणि को लेने दौड़ता है मगर शुक्राचार्य उठ जाता है और उनको बिजली की रस्सी से जकड़ लेता है और उन लोगों को शुक्र ग्रह पर कारावास में बंद कर देता है।

वह अरुण ग्रह पर दोबारा जाता है और उसके आस-पास मणि को ढूँढ़ कर उसे नरक लोक में जाकर कलिपुरुष के कैद का आखिरी ताला तोड़ देता है। “विश्वस्य परा शक्तिः कलिपुरुषः दानवरास्ये प्रथमः पराक्रमी राक्षसः प्रबोध्येता” जैसे ही कलिपुरुष जागता है पूरे ब्रह्मांड में प्रलय आ जाती है। कभी कोई सौरमंडल फूटता है, कोई आकाशगंगा भस्म होती है और हमारी पृथ्वी की हालत भी बिगड़ी हुई थी। वहाँ भी पानी की बड़ी लहरें उठने लगीं। रूस की जमीन को फाड़कर कलिपुरुष कई इमारतों को तबाह करने लगा। कलिपुरुष सारे इंसानों को अपने वश में करके घनघोर पापी बना दिया। पूरे संसार के ज्वालामुखी एक साथ फटे। भगवान श्री कृष्ण ने टीम भोलेनाथ को आजाद किया और उन्हें कुछ शक्तिशाली अस्त्र देकर पृथ्वी पर भेजा।

“तबाही! तबाही! तबाही! मैंने इतने सालों तक पृथ्वी को खत्म करने को सोचा और आज जाकर यह मौका मिला है। इस मौके को मैं हाथ से जाने नहीं दूंगा। हर तरफ सिर्फ और सिर्फ तबाही होगी। अच्छाई का नामों निशान मैं मिटा दूंगा पहले पृथ्वीलोक फिर स्वर्गलोक और धीरे-धीरे मैं सारे ब्रह्मांड पर कब्जा करूंगा।” कलिपुरुष को उसके सर पर अचानक से ठंड महसूस हुई। उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसने वीरभद्र को पाया।

“शांत! कलयुग के पुरुष शांत, आसान नहीं होगा तुम्हें हराना” वह मुझे भी पता है, मगर बुराई अच्छाई से कभी जीती नहीं है और यह इतिहास था, वर्तमान है और भविष्य रहेगा चाहे कुछ भी हो जाए” वीरभद्र कहता है। “ओ चटर पटर करने वाले मानव वीरभद्र तुम्हें सिर्फ उसका सामना नहीं, मेरा भी सामना करना होगा। तुम्हें अब कोई नहीं बचा सकता भोलेनाथ। शुक्राचार्य यह कहते ही वैकुण्ठास्त्र से हमला करता है जो अकेला 10 सुदर्शन चक्र की शक्ति रखता है। टीम भोलेनाथ ने अपनी शक्तियों को मिलाया और एक महादर्शन चक्र बनाया जो 20 वैकुण्ठास्त्र की ताकत रखता है। वह महादर्शन चक्र शुक्राचार्य को बीच से काटने लगता है लेकिन कलिपुरुष उस चक्र को तोड़ देता है और शुक्राचार्य को और ज्यादा शक्ति देता है। कलिपुरुष उन राक्षसों को भी जगाता है जो बहुत पहले देवताओं के द्वारा मारे गए थे। रावण, महिषासुर, हिरण्यकश्यप, कंस जैसे शक्तिशाली दानव के साथ कौरव, पूतना, ताड़का आदि जैसे छोटे पर ताकतवर दानवों को भी उसने जगाया। सारे राक्षस जागकर कलिपुरुष के पास आते हैं और जमीन पर अपनी व्यूह रचना करते हैं। दानवों की सेना का सेनापति रावण और उपसेनापति कंस था। टीम भोलेनाथ ने थोड़ी हिम्मत जुटाई और भागकर अपनी शक्तियों से हथियार बनाकर रावण और कंस की सेना का सामना करते हैं। जैसे ही वह सेना के बीच में पहुंचते हैं तब कंस उनके पास आकर उनको बहुत मारता है और बहुत दूर फेंक देता है। वे लोग जहां गिरते हैं वहाँ वीरभद्र भगवान श्री कृष्ण की बर्फ की एक मूर्ति बनाता है और श्लोक पढ़ते हैं।

“ हे शक्तिपुंज, हे मानव रक्षक

हे आदि देव दिवाकर

मन कि गहरी तमस को

हर कर जीवन करो उजाकर

शक्ति दो हमें जीवन में

मदद करो स्वयं आकर”

इस श्लोक से भगवान श्री कृष्ण प्रकट होते हैं और उन्हें कुछ अस्त्र देते हैं जैसे ब्रह्मास्त्र, शिव-त्रिशूल, वज्र, सुदर्शन आदि। उन अस्त्रों का इस्तेमाल करके वह रावण और कंस की सेना को खत्म तो करते हैं लेकिन जो रक्त उनका जमीन पर गिरता तो उससे वे लोग वापस से जिंदा हो जाते और अगर कुछ राक्षसों के रक्त मिल जाए तब वह और 10 गुना शक्तिशाली हो जाते।

टीम भोलेनाथ बहुत कमजोर हो गई थी। चित्रगुप्त ने उन सबको स्वर्गलोक की तरफ खींचा। उन्होंने उन्हें अमृत पिलाया और बिस्तर पर लिटाया। जैसे ही वह सब होश में आए तब चित्रगुप्त ने उनसे कहा “टीम भोलेनाथ जैसी अब तुम्हारी हालत है हम देवताओं ने तय किया है कि हम सब भी देवों की सेना बनाकर तुम्हारी मदद के लिए आएं।” वीरभद्र राजी हो जाता है और अपनी सेना लेकर पृथ्वी लौटता है।

देवताओं के सेनापति भगवान श्री कृष्ण थे। उन्होंने जैसे ही शंखनाद किया वैसे ही सब का गर्जन शुरू हुआ। उन्हीं पुण्य हाथों से सब का मर्दन शुरू हुआ। यह दृश्य देखकर भगवान श्री कृष्ण को महाभारत याद आ गई। आज वह कहावत भगवान श्री कृष्ण की सच साबित होती दिख रही थी कि “समय अपने आपको हमेशा दोहराता है।” वह अपनी नम आंखों को पोंछकर अर्जुन की याद में रणभूमि में उतरे। वीरभद्र उन्हें एकदम अर्जुन जैसा प्रतीत हो रहा था। “ये लो वीरभद्र रथ। यह वही रथ है जिसमें अर्जुन बैठा था और मैं उनकी सारथी बना हुआ था और यह गाँडीव भी पकड़ो जिससे अर्जुन ने कौरवों के वंश का नाश किया था।” वीरभद्र को अर्जुन की कुछ चीजें देकर श्री कृष्ण ने सोचा कि यादें दोहराई जाएं। वीरभद्र गाँडीव लेकर रथ पर बैठ गया और श्री कृष्ण ने वीरभद्र का सारथी बनकर रथ को आगे बढ़ाया। श्री कृष्ण ने राक्षसों की सेना में कौरवों को भी देखा। उन्होंने सोचा कि आज अर्जुन की तरह वीरभद्र भी फिर उन्हें देखकर गाँडीव हाथ से छोड़ देगा क्योंकि 100 कौरवों में से 30 लोग उसके परिवार वाले ही थे। श्री कृष्ण को वह हादसा सच घटित होते नजर आ रहा था क्योंकि वीरभद्र थोड़ा उदास नजर आ रहा था। उनको लगा कि उन्हें फिर गीता का ज्ञान देना पड़ेगा। उन्होंने जैसे ही वीरभद्र को कुछ कहने के लिए उसके कंधे पर हाथ रखा तभी वीरभद्र ने उसके चाचा को मार डाला। उसकी नैनों से आँसू तो आए मगर उसने हिम्मत करके उसके मामा को भी मार दिया। उसने अपने खानदान के 2 और लोगों को भी मारा। कृष्णा मैंने गीता, महाभारत पढ़ी है। मुझे पता है कि मृत्यु ही सत्य है और जीवन सिर्फ एक माया। जिसने मृत्यु को छोड़ जीवन को पकड़ा, वह आखिर क्या ही हासिल कर पाया। मैं तो अब मारूँगा और आप युद्ध में मार्गदर्शन दीजिए। इसके आगे क्या हुआ इसके लिए अगला भाग पढ़ना होगा।



बेटी की विदाई

श्री मुकेश कुमार, डी.ई.ओ.

मेरा हाथ दिया बापू ने और आया समय विदाई का
रुदन उदासी छाई ऐसी , हाल बुरा था माई का

मेरी आँसू और कोलाहल ने, पिता को झकझोर दिया
बिटिया पूछ रही थी पापा, तुमने सचमुच में छोड़ दिया ?

रानी थी बगिया की मेरी, मुझको सदा कहा तुमने
मेरे कष्ट को कभी नहीं, बिल्कुल भी नहीं सहा तुमने

क्या आपके हृदय में, मेरा कुछ स्थान नहीं
अब मेरे विरह का पापा, तुमको बिल्कुल ध्यान नहीं

नहीं रोकते कोई परिजन, भाभी से भी आस नहीं
ऐसी भी क्या बात हुई है, साया भी आता पास नहीं

बेटी के क्रंदन को सुन कर, पिता नहीं रह सका खड़ा
अपनी लाडो को गले लगाने, बदहवास सा दौड़ पड़ा

माँ को लगा गोद से कोई, जबरन सब है छिन चला
घर की बगिया से कली पुष्प सब, खींच चला

सदा कड़क कर रहने वाला, कभी नहीं वह झुकने वाला, फूट-फूटकर रोया है
बेटी के विरहाकुल घर ने, जाने क्या-क्या खोया है !!





समर शेष है आ जाओ

श्री योगेश कुमार मिश्र
हिंदी अधिकारी

भग्न दीवारों की ईंटों से
टूटी तलवारों की धारों से
मन मलीन और क्लान्त तन से
उषा ने मुंह फेर लिया पर, साहस गीत सुना जाओ -समर शेष है आ जाओ
अगणित आशाएं अपूर्त
असंख्य कल्पनाएँ अमूर्त
होनी है साकार अभी
नभ में गूंजे जयकार कभी, वह जय जय कार सुना जाओ - समर शेष है आ जाओ
हम दंतहीन अब रहे नहीं
हम विषहीन अब रहे नहीं
नख भी है लिए अब पैनापन
उष्ण रुधिर में नव यौवन , फिर से चिंगारी भड़का जाओ - समर शेष है आ जाओ
अब खोने को क्या रहा मित्र
अब गढ़ने हैं विजय चित्र
रण ऐसे नहीं सजा करता
करने होंगे कर्म विशेष –विचित्र
नव शलाका बाण संधान करा जाओ -समर शेष है आ जाओ
कल बीत गया
कल क्या होगा
इनसे परे होना होगा
कस कमर समर में कूदेंगे
फिर न कभी रोना होगा
भिंचे मुझी अब तान हवा में लहराओ -समर शेष है आ जाओ
क्षण-क्षण बीत रहा है वीर, कण-कण से भर लो तूणीर

अब पीर नहीं है सही जाती, रग-रग में चुभते विष भरे तीर
कर नाद गंभीर ,कुछ ऊपर कर सीर
हो उद्धत रण में आ जाओ -समर शेष है आ जाओ
है विभु पर विश्वास ,रहते श्वास हम विजय पा लेंगे
अपनी माटी होगी चन्दन ,जब अपना रक्त बहा देंगे
स्वेद-श्रम से जो मिला नहीं
वह रुधिर -रक्त से पा जाओ -समर शेष है आ जाओ





सब कृष्ण में मिल जाएगा

सुयोग सूर्य मिश्र
अतिथि रचनाकार

पाप के बादल जब
सूरज को ढक लेंगे
भगवान को छोड़कर
सब हैवान को ही पूजेंगे

स्वार्थ ही परमार्थ होगा
दया मिट्टी में मिल जाएगी
घमंड सबके सर पर होगा
शुद्ध गंगा दूषित हो जाएगी

साँस लेना भी कठिन होगा
कोई हिल भी कैसे पाएगा
पाप के इस महाचक्र में
कोई जीवित कैसे रह पाएगा।

आसमान एक दिन फटेगा जोर से
धरती पर दिखेगा पुण्य जोर शोर से
कलयुग ने जो केवल कलिपुरुष को देखा है
नारायण दिखेंगे जिनका खेल अनोखा है।

सब नारायण पर मोहित होंगे
तब प्रेम की वर्षा होगी
जहाँ केवल दिखता था रक्त
अब वहाँ फूलों की वर्षा होगी

कलिपुरुष जलन के मारे
कल्कि से भिड़ जाएगा
कल्कि के उस तेज को देखकर
पाप का एक कण भी न बच जाएगा।

कलयुग के इस महायुद्ध के बाद
सब कुछ कृष्ण में मिल जाएगा
पुण्य के हर कण
नारायण में मिल जाएगा।

अब भी जीवन जी रहे हैं
और रह रहे हैं वह हमारे साथ
अभी भी पकड़ रखा है
अपने हर भक्तों का हाथ

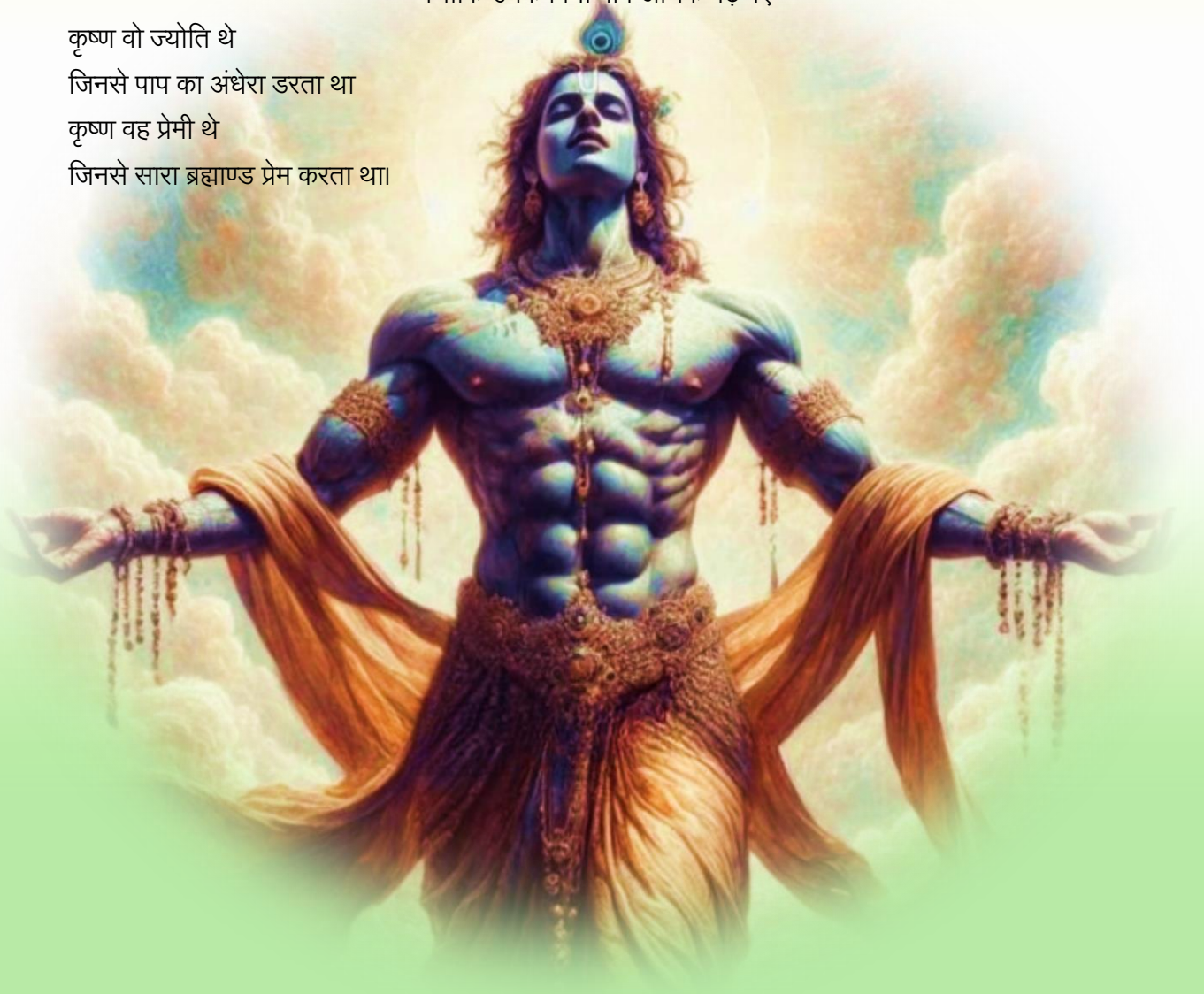
अभी भी कृष्ण अर्जुन की तरह
हमें धर्म की राह बताते हैं
अभी भी वह हमारे हर युद्ध में
हमारे सारथी बन जाते हैं।

कृष्ण के बैकुंठ सिधारने के बाद
सारे द्वारका वालों का मन रोता था
यह दुखद खबर को सुनकर
अर्जुन भी ठीक से न सोता था

वृन्दावन वालों की दशा
कोई कैसे देख पायेगा
जिन्होंने उसे पाला था
वह उस अनंत दुःख कैसे झेल पायेगा

द्वारका भी जलमग्न हो गई
भक्त भी जीवित रहकर मर गए
पुण्य ये महासंग्राम कैसे जीतेगी
क्योंकि उनके बिना पाप अधिक बढ़ गए

कृष्ण वो ज्योति थे
जिनसे पाप का अंधेरा डरता था
कृष्ण वह प्रेमी थे
जिनसे सारा ब्रह्माण्ड प्रेम करता था।





दहेज कानून का दुरुपयोग

श्रीमती सुमन मिश्र
अतिथि रचनाकार

मनुष्य में लोभ, ईर्ष्या और क्रोध जैसी बुराई पहले से ही विद्यमान है हमें दिखावे के लिए और अपनी अनावश्यक मांग की पूर्ति हेतु धन की जरूरत होती है। जब हम अपनी अर्जित कमाई से अपने सपने पूरा नहीं कर पाते तो लोभ वश दूसरों से अपेक्षा करते हैं। विवाह एक संस्थागत प्रक्रिया है जिसमें दहेज का लेन-देन एक सामाजिक बुराई के रूप में खूब पनपा है, कोई भी बुराई *चेन-रिएक्शन* जैसा होता है, हमने दहेज दिया है इसी वजह से हमें दहेज लेना है।

दहेज एक ऐसी सामाजिक कुप्रथा है जिसका शिक्षित होने या न होने से बहुत ज्यादा अन्तर नहीं पड़ रहा है बल्कि इसे शिक्षित वर्ग के द्वारा बढ़ावा मिलता रहा है। भारतीय कानून के अनुसार दहेज लेना और देना दोनों ही अपराध है पर अपने देश में 97% शादियों में दहेज दिया और लिया जाता है।

दहेज के कारण ही माँ-बाप को अपनी बेटियाँ बोझ-सी लगती है। जिसकी वजह से लोग भ्रूण हत्या जैसे निकृष्ट कार्य को भी कर देते हैं, क्या आपको पता है बहुत से लोग दहेज के लिए लोन लेते हैं और सही समय पर किश्त न भर पाने की वजह से उन्हें चिंता होती है और यह चिंता *हार्टअटैक*, मानसिक निष्क्रियता के कारण मौत भी हो जाती है। क्या किसी की जान की कीमत पैसों से ज्यादा है?

भारत के वीरों, युवाओं, पढ़े-लिखे लोगों, विद्यार्थियों अब तुम्हें जागना होगा और दहेज रुपी कुप्रथा को जड़ से मिटाना होगा। हर सामाजिक कुरीति का शिकार हैं। किसी न किसी दिन हम और आप भी होंगे। निश्चय करें – उससे पहले इस दहेज के दानव को मार देंगे। महावीर प्रसाद 'मधुप' ने बहुत हृदयस्पर्शी लिखा है।

लगती रोज़

नुमाइश बेटों की खुल कर लगती बोली,

लूट मचाती घूम रही पापी बटमारों की टोली,

कब उसने आँसू के अंतर्मन में झाँका जाता है,

मूल्य वधू का केवल कुछ सिक्कों से आँका जाता है,

कब किसकी दयनीय दशा पर पाते हैं पाषाण पिघला

इस दहेज के दानव ने सारे समाज को दिया है कुचला।

इन सब के बावजूद इसी मुद्दे का दूसरा पहलू है इसके कानून का दुरुपयोग, 498A के साथ-साथ मारपीट और अन्य आरोप तो लगाए ही जाते हैं साथ में लड़के के माता पिता और उनके रिश्तेदारों को भी इसमें फंसाया जाता है। महिलाओं के प्रति क्रूरता तो सारे समाज को दिखता है पर महिला की क्रूरता कम रेखांकित की जाती है। मेरे परिचित के घर भी ऐसा ही मामला देखने को मिला जब बहु ने अपने मायके वालों के साथ अपने सास ससुर को बुरी तरह से मारा-पीटा। सास पहले से घायल थी, उनका एक्सीडेंट हो रखा था और लड़के के पिता हृदय रोग से ग्रसित और बीमार, बेड पर पड़े थे, उन्हें कई थप्पड़ मारा गया। यह सब कृत्य केवल और केवल अपमानित करने और डराने धमकाने के लिए किया जाता है। इज्जतदार लोग अपनी इज्जत और नेकनामी को गिरते नहीं देख सकते। अतः मौन हो कर प्रताड़ना झेलते हैं।

सुश्री दीपिका महाले ने इस पर अपनी विहंगम दृष्टि डाली है। उनका तर्क अकादमिक और संदर्भित करने योग्य है। भारतीय दंड संहिता में व्यापक अपराध बनाया गया। भारतीय दंड 304-बी जोड़ी गई, जिससे दहेज बन गई, जिसके लिए और अधिकतम आजीवन सकती है। आईपीसी में दुल्हन के साथ क्रूरता और का प्रावधान है। इस संहिता सख्त निषेध है। दंड 198-A ऐसे प्रावधानों के है। भारतीय साक्ष्य प्रावधान है कि आरोपी होगा। इसके अलावा 1961 पारित किया दहेज उत्पीड़न के कई यही वजह है कि दहेज और दहेज उत्पीड़न अधिनियम के कि कोई भी व्यक्ति जो या देने या लेने के लिए कारावास या जुर्माना या



संशोधन कर दहेज को दंडनीय संहिता, 1860 में धारा हत्या एक विशिष्ट अपराध न्यूनतम 7 वर्ष कारावास कारावास की सजा हो दुल्हन को जलाने, यातना देने पर भी दंड में धारा 498-ए एक प्रक्रिया संहिता की धारा लिए प्रक्रिया तय करती अधिनियम में यह को सबूत का भार उठाना दहेज निषेध अधिनियम, गया। हालांकि आजकल मामले सामने आए हैं। हत्या, दहेज प्रताड़ना खत्म नहीं हो पाया है। प्रावधान में कहा गया है दहेज देता है या लेता है उकसाता है, उसे दोनों से दंडित किया

जाएगा। केंद्रीय दहेज अधिनियम के अलावा राज्य सरकारें भी दहेज के लिए दंडनीय अपराध बनाती हैं। दहेज निषेध के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रयास के लिए अपने स्वयं के प्रावधान बनाए हैं।

जब कोई मामला शादी के 7 साल के भीतर किसी महिला द्वारा आत्महत्या से जुड़ा होता है, तो अदालत यह मान लेगी कि आरोपी आत्महत्या के लिए उकसाने का दोषी है और मजिस्ट्रेट पुलिस जांच के खुद भी जांच कर सकता है।

दहेज कानून का दुरुपयोग

दहेज उत्पीड़न के निषेध से संबंधित उपरोक्त सभी प्रावधानों में दहेज निषेध अधिनियम बहुत महत्वपूर्ण है। यह अधिनियम विशेष रूप से दहेज की बुराई को खत्म करने के उद्देश्य से बनाया गया था। लेकिन अवलोकन से ऐसा लगता है कि महिलाएं ससुराल वालों को परेशान करने के लिए दहेज विरोधी कानून का तेजी से इस्तेमाल कर रही हैं। आरोप है कि कई मामलों में, पति और उनके रिश्तेदारों पर अक्सर उनकी पत्नी या उसके परिवार के सदस्यों द्वारा झूठे दहेज उत्पीड़न के मामले दर्ज किए जाते हैं, जब कुछ वैवाहिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। तथ्य यह है कि पुरुष धारा 498-ए के "दुरुपयोग" से पीड़ित अधिनियम की खामियां:-

दहेज निषेध अधिनियम, 1961 दहेज की प्रथा को खत्म करने के लिए बनाया गया था, लेकिन इस अधिनियम में बहुत सी खामियां हैं।

वर्तमान में "दहेज" (धारा 2) की परिभाषा स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं है या अधूरी है, अर्थात - यदि आप विश्लेषण करें तो ऐसा लगता है कि -

प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से क्या अभिप्राय है?

"विवाह के संबंध में" वाक्यांश को कैसे परिभाषित किया जा सकता है?

"विवाह के बाद किसी भी समय" वाक्यांश के उपयोग से कोई किस समय अवधि पर विचार कर सकता है?

क्या इस परिभाषा में उपहार और विनिमय शामिल हैं? इस अधिनियम के दुरुपयोग को रोकने के उद्देश्य से 1986 में अधिनियम में संशोधन करने की मांग की गई थी, धारा 8-बी पेश की गई जो राज्य सरकार द्वारा दहेज निषेध अधिकारियों की नियुक्ति से संबंधित है। दहेज मांगने, लेने और देने के लिए निर्धारित दंड बहुत कम थे। इसलिए अधिनियम में समय-समय पर संशोधन किए गए हैं। दहेज निषेध अधिनियम, 1961 की विफलता का मुख्य कारण यह है कि अधिनियम के प्रावधान का उल्लंघन एक संज्ञेय अपराध नहीं बनाया गया है। वर्तमान में यह अपराध गैर-समझौता योग्य है और इसलिए बड़ी संख्या में मामलों में पत्नियों या उनके परिवार के सदस्यों को केवल पैसे ऐंठने के लिए फंसाया जाता है। विधि आयोग ने सिफारिश की है कि धारा 498-A के तहत अपराध को न्यायालय की अनुमति से समझौता योग्य अपराध बनाया जाना चाहिए।

अपराधिक न्याय सुधार पर न्यायमूर्ति मलीमथ समिति ने भी सिफारिश की है कि इसे समझौता योग्य और जमानत योग्य दोनों बनाया जाना चाहिए। बहुत से लोगों की राय के अनुसार अगर अपराध समझौता योग्य हो जाता है तो इससे न्यायालय पर मामलों का बोझ कम हो जाएगा।

लेकिन मुझे नहीं लगता कि अपराध को समझौता योग्य या गैर समझौता योग्य बनाने से कोई फर्क पड़ता है। दहेज जैसी बुराई समाज में बहुत गहरी जड़ें जमा चुकी है और इसे खत्म करने में बहुत समय लगता है। वर्तमान में यह स्थिति है कि कानून तो बहुत हैं लेकिन कोई ऐसा विशिष्ट या सटीक कानून नहीं है जो इस समस्या का समाधान कर सके।

माननीय उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय ने भी ऐसे मामले तो गंभीरता से लिया है। आज मोबाइल और इंटरनेट का जमाना है। सूचना का आदान-प्रदान बहुत सहज हो चला है ऐसे में किसी को प्रताड़ित करना और उसकी खबर दबा देना आसान नहीं है।

दहेज ही नहीं यौन उत्पीड़न का मामला भी ऐसे ही फर्जी लगा दिया जाता है, हास्यास्पद यह है कि जो सचमुच पीड़ित हैं उन्हें न्याय नहीं मिलता और जो सशक्त और क्रूर हैं वे दूसरों को प्रताड़ित कर रहे हैं। आज *लिव इन रिलेशनशिप* का चलन है ऐसे में लड़की और लड़का साथ रहते हैं जब कोई विवाद हो जाता है फिर लड़की उस पर यौन उत्पीड़न का मामला दर्ज करा देती है।

भारत में कई तरह के सुधार की आवश्यकता है जिसमें पुलिस *रिफॉर्म* और न्यायपालिका *रिफॉर्म* की जबरदस्त आवश्यकता है। नया भारतीय दंड संहिता मानवता के आधार पर बनाया गया है जिसमें बेगुनाह को जमानत आदि पर नए प्रावधान बनाये गये हैं। हिन्दू विवाह अधिनियम, सम्पत्ति आदि से जुड़े नियम इस वजह से बनाये गये थे कि विवाद को कम किया जा सके और सामाजिक दायित्वों का ठीक से निर्वहन हो सके, इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य हिंदूओं और अन्य लोगों के बीच विवाह से संबंधित कानून को संशोधित और संहिताबद्ध करना था। शास्त्री कानून को संशोधित और संहिताबद्ध करने के अलावा, इसमें अलगाव और तलाक को भी शामिल किया गया, जो शास्त्री कानून में भी मौजूद हैं। इस अधिनियम ने हिंदूओं के सभी वर्गों के लिए कानून की एकरूपता लाई। भारत में धर्म-विशिष्ट नागरिक संहिताएँ हैं जो कुछ अन्य धर्मों के अनुयायियों को अलग से नियंत्रित करती हैं।





तुम ही हो

श्रीमती सुमन मिश्र
अतिथि रचनाकार

चढ़ा देते हो कभी शिखर पर
बिना किसी कारण
उतार देते हो
बिना कुछ संकेत दिए
कभी फूल-माला से स्वागत
कभी हार के हार को
कर देते हो मेरे हवाले
कहते हैं दिया हुआ लिया नहीं जाता
लेकिन तुम्हारे मामले में ठीक
इसका उल्टा है
तुम यह देह देते हो
छीन लेते हो
तुम यह साँस देते हो
और तोड़ देते हो
तुम्हारा सब कुछ देना
अगले पड़ाव पर छीन लेने के लिए ही तो है
हम बेबस हैं
लाचार
और बीमार हैं
तुम देते हो इस वजह से दाता हो,
मालिक और नियंता हो
प्रभु हम क्या हैं...
नगण्य
तुच्छ जीव
कहा जाता है



तुम्हें प्रेम चाहिए ..
क्या मेरा प्रेम तुम्हें रुचेगा ?
क्या मेरे आधेमन के प्रयास
मेरा अनमना स्मरण
मेरे दूषित और गर्हित विचार
देख कर नाक-भों सिकोड़ भाग खड़े तो
नहीं होंगे ..
तुम्हें चाहिए पूर्ण समर्पण
हर और से अपूर्ण मैं
कहाँ से लाऊँ इतनी पूर्णता
तुम्हें है निर्मल मन पर आकर्षण
निर्मल नहीं हूँ मैं ,
हां हूँ अपाद मस्तक भीगी कुभाव से
जन्म जन्मान्तर के अपने स्वभाव से
कितनी लडूँ भीतर के विरोध से
कितना जलना होगा अपनी पीड़ा और घाव से,
इन सब के पश्चात भी
मेरे स्वामी !
हम जगत के जीव
आप जगन्नाथ हैं
आपके बिना हम सर्वथा अनाथ हैं
कितने भी भंवर में फंसे हुए हैं हम आज
पर भरोसा एक मात्र की तुम हो
आदि और अंत और कहूँ तो अनन्त
तुम ही सर्वत्र हां “तुम ही हो ”





कौस्तुभ

श्री योगेश कुमार मिश्र
हिंदी अधिकारी

कौस्तुभ नाम था उसका, भावुक नेत्रों वाला वह लड़का मर्मस्पर्शी अंतर्वेदना की प्रतिमूर्ति था। 5'8" का गोरा, भरा बदन, छोटी आँखें, ऊँचा ललाट, साधारण नैन नक्श वाला कौस्तुभ, हमेशा अपने विचारों की झंझावात में घिरा रहता। वह हंसमुख था, अंतर के दुःखों को ढकने के लिए उसने हंसमुख स्वभाव को साधन बनाया। दुःख को सुखद हंसी से छिपाना वह जानता था और अनहोनी को होनी में बदलने की सोच भी तो उसी में थी।

बाल्यकाल में ही उसके सदाचारी पिता ने उसमें शुभ संस्कारों की नींव डाली थी। शुचिता, ब्रह्मचारण, स्नान, हरिस्मरण और पूज्यों को नमन। ब्राह्मण कुल का वह लड़का तेजोवलय से निष्णात था, मेधा उसकी सहचरी थी, कंठ कोकिल और धीर कुशाग्र थी। भावुकता उसका दुर्बल पक्ष था, यह मतिभ्रम उत्पन्न करती। भावुकता के चरमोत्कर्ष पर उसकी प्रबल भावनाएं वैचारिक मतभेद के शिखर पर चढ़ने और समाधान रूपी लक्ष्य को पाने का प्रयत्न करती। वह बार-बार चिंतन करता, ऐसा क्यों होता है?, यह क्यों हो रहा है? इन सब प्रश्नों की झंझा में वह खो जाता और उसकी स्मृति उसे अपने भूतकाल के कंटकपूर्ण जीवन में ले जाकर रख देती। कौस्तुभ की आँखें बहुत गहरी थी, क्योंकि वह विचारक था।

उम्र के इस पड़ाव पर वह प्रतियोगी परीक्षाओं का एक प्रतिस्पर्धी था। आज के युग के अनुसार दुर्लभ नौकरी के तलाश में था। कौस्तुभ इतना शीघ्र क्यों स्वावलंबी हो गया था और क्यों वह इतना प्रौढ़ था, यह उसे भी पता न था। जीवन के संस्मरण और बुद्धि को प्रौढ़ करने वाली घटनाएं उसे अवश्य इस ओर अग्रसर कर पायी हों, पर पिता को तो यही लगा, मैंने अपनी ओर से कोई कसर न छोड़ी। चार भाइयों में वह तीसरा था। उसे अपने छोटे के प्रति अपनी छवि का भी ख्याल था, अतः उसका चरित्र धवल व संगति स्वच्छ थी।

कौस्तुभ मिलनसार तथा सामाजिक है, यह सभी जानते थे, पर वह अंतर्मुखी और एकांत प्रिय भी था, यह उसके सिवा उसका एक मित्र ही जानता था। वह मित्र था संभव, संसार के सारे कार्य उसके लिए असंभव थे, पर उसका नाम संभव था। संभव को मिले बचपन के अधिक लाड़ प्यार तथा भविष्य के प्रति उसकी निश्चित भावनाएं उसे लापरवाह और आलसी बनाती थी।

कौस्तुभ संवेदनशील था, जबकि संभव संवेदनशीलता की लीक से हटकर मनमौजी और मस्त लड़का था। वह मुसीबतों से बचने वाला और सहूलियत की खोज में प्रयत्नशील रहनेवाला बुद्धिमान लड़का था, कौस्तुभ से उम्र में कुछ बड़ा होने के बावजूद भी वह उसके विचारों का सम्मान करता था।

कौस्तुभ सबके दुःख-दर्द को बांटता और यथाशक्य काम आता। वह अपनी चचेरी विधवा बहन का भी सहारा था। उसे वह हमेशा समझाता, हमेशा बताता कि तेरा पुत्र मैं हूँ, तुम्हें किसी चीज की तकलीफ न होगी। एक बार वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गई, कौस्तुभ ने उसकी दिन-रात सेवा की उसके उपकार से नतमस्तक करुणा ने उसे लाखों दुआएं दीं। ज्वर से तप्त हथेलियों को जब कौस्तुभ ने अपने हाथों में लिया, तब करुणा की आँखें भर आई और उनसे ऐसे अश्रुपात होने लगे जैसे वर्षा से झरने का प्रवाह तेज हो जाता है। करुणा इसलिए भी अधिक रोती थी कि वह उसकी केवल बड़ी बहन ही नहीं वरन अतीत की संरक्षिका भी थी, तब उसने उसके साथ न्याय नहीं किया था, संसार में बहुत कम लोग हैं जो दुःख के बदले सुख देते हैं। संत हृदय कौस्तुभ ऐसे ही विरलों में था।

तब कौस्तुभ 11 साल का रहा होगा, यानि 10 साल पहले कौस्तुभ का बाल्यकाल शरारतपूर्ण एवं लापरवाह था। पिता की इच्छा गाँव में ही साथ रहकर पढ़ाने की, पर माँ को अपने गाँव में बच्चे का भविष्य अंधकारमय नजर आता

था। ग्रीष्मावकाश में करुणा महाराष्ट्र से घर आई हुई थी। करुणा बचपन से ही कौस्तुभ की माँ देवयानी की लाड़ली थी। करुणा, कौस्तुभ की चचेरी बहन थी, जो अपनी माँ के साथ अधिक दिनों तक नहीं रह पायी, ट्यूबरक्यूलोसिस के कारण करुणा की माँ का देहांत हो गया था उस समय करुणा की उम्र मात्र पाँच वर्ष थी, तब से देव यानी करुणा की चाची से अधिक माँ थी। देवयानी के केवल चार लड़के थे, , सो पुत्री का मोह दुलार करुणा पर ही बरसा।

अच्छी शिक्षा का प्रबंध देख माता-पिता ने कौस्तुभ के साथ भेजने का निश्चय किया। करुणा उसे पढ़ाने के बहाने महाराष्ट्र तो ले आई पर मंशा उसकी कुछ और ही थी। वह घर के कार्य और बच्चों की देखभाल हेतु उसे उपयुक्त नौकर समझ रही थी। वह नौकर भी आवश्यकता से अधिक दयालु था। कौस्तुभ स्वभाव से चंचल और शरारती था, पर उसकी शरारतों की सीमा उसके परिवार तक ही सीमित थी, अनजान जगह और नया परिवेश उसकी संकोची भावनाओं को बल प्रदान कर रहे थे। वह बंध सा गया था करुणा के पति राघव थे। राघव थल सेना में थे और बेहद सुलझे हुए इंसान थे। कौस्तुभ के अकेलेपन और करुणा की उसके प्रति कठोर व्यवहार से वे परिचित थे तथा उसे दूर करने का भरसक प्रयास करते। राघव ने कौस्तुभ का नामांकन शहर के

सबसे अच्छे विद्यालय में करवाया, यह उनकी दूरदर्शिता थी जिसमें परिस्थिति बड़ी

एकारागात्मकता से भरी थी।

शांति जो तीन वर्ष की

अपने पति के लिए

कौस्तुभ शांति की

को झेलता, राघव शेव

पहनते, जूतों पर तेजी से

चमचमाते और बारी

यह सोमवार की सुबह

शुक्रवार तक कोई

रोज मंत्र की भांति

दुहराया जाता।

बदलाव आता तो

शांति कुछ देर से

फिर उसके शांत

कारण कौस्तुभ डाँट

थप्पड़। सुबह आठ बजे तक

पड़ता, शीघ्रता और

स्नान नहीं कर पाता।



तथा उसे दूर करने का भरसक प्रयास

सबसे अच्छे विद्यालय में

सद्भाव भी था, पर घर की

दयनीय तथा

सुबह सवेरे करुणा की बेटी

थी, उठ जाती। करुणा को

नाश्ता बनाना होता,

अशान्ति

करते, ड्रेस

पॉलिश मारते, जूते

आती बेल्ट की,

थी, जिसमें

बदलाव नहीं था।

वही सब

बहुत अधिक

यही कि

उठती, या

न होने के

खाता या

उसे भी तैयार होना

आलस्य के कारण

अपने चाचा से उसने

इसका इलाज पाया था। कौवा-स्नान, यानि सिर भिगो लिया काफी है। अच्छी तरह कंघी करने के बाद तो कोई नहाया हुआ भी फेल लगता उसके सामने। कक्षा में कौस्तुभ आरंभिक दिनों में तेज छात्रों की श्रेणी में था, उत्तरोत्तर उसके प्रदर्शन में कमी आई। करुणा का व्यवहार भी अपने स्थान से नीचे की ओर सरक रहा था। हर बात में ताना, बार-बार डाँट और नौकरों जैसा व्यवहार, कौस्तुभ का अंतस हर बार दुःख से टूटता, उसमें दरारें आती।

पड़ोसियों के गप्प ने बचत की क्या बात चला दी, बेचारा कौस्तुभ उस बचत रूपी असुर का शिकार हो गया। गाँवों में कहावत है, जब घर पर कोई कयामत आती है तो पहले शिकार, घर के पालतू पशु होते हैं। करुणा के संकीर्ण

हृदय ने बचत का मार्ग खाने में तलाशा। स्थूल कौस्तुभ की स्थौल्यता और अपनी बेटी शांति की दुर्बलता का तुलनात्मक अध्ययन अनायास उसकी आँखें करने लगती।

जब अंतःकरण मैला हो जाता है, तो स्वच्छ वस्तु भी अस्वच्छ-अपवित्र दिखाई पड़ती है। मन में अगाध शांति हो तो संसर्ग भी शांति ही फैलाती है। संसार तो आईना है – जैसे हम वैसे हमारा परिवेश। अब कौस्तुभ के लिए तीन रोटियों के बाद की आशा बेकार थी। पराठे से अच्छी अब सादी रोटियाँ लाभप्रद हो गईं। लंच बॉक्स का वजन कम हो चला था। इस तरह के व्यवहार की आशा उसे स्वप्न में भी नहीं थी, पर चुप रहना और सहन करना उसे ईश्वर ने उपहार स्वरूप दिया था।

कष्ट, कृष्ण से निकट करता है और सुख कृष्ण से दूर – यह कुंती कहती थी। वह कृष्ण से दुःख मांगती है, क्योंकि इससे कान्हा आसपास रहता था। कौस्तुभ के कमरे में भक्त-वत्सल कृष्ण की फोटो टंगी थी। रात्रि में वह उन्हें गौर से देखता और देखते-देखते उसके अक्ष से अविरल अश्रुपात होता। वह कभी यह नहीं कह पाता कि तुम मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हो, क्योंकि नीचे लिखा था, जो होता है अच्छे के लिए होता है, जो हो रहा है, अच्छे के लिए हो रहा है, और ऊपर से श्रीकृष्ण की करुणानिधान आँखें तथा स्निग्ध मुस्कान। वह संतोष कर लेता, वह स्वयं से बातें करता कहतानिर्बल के बलराम।

विपरीत परिस्थितियाँ मानव को आरंभ से ही सबल, दृढ़ और धैर्यवान बनाती आई हैं। वह भी बुद्धि से प्रौढ़ हो चला था। विचारों का प्रभाव मानस और देह होते हुए चरित्र पर भी पड़ता है। करुणा अपने बारे में कम सोचती थी, वह या तो कौस्तुभ का छिद्रान्वेषण करती, नहीं तो शांति को लेकर अपनी असीम महत्वाकांक्षाओं के बारे में सोचती अपने प्रति पति की लापरवाही के कारण अहर्निश जलती रहती। द्वेष, वैर आदि निम्न व अधोगामी विचार उसके मानस पटल पर अमिट स्याही से लिखे जाते थे। जलन और चिंता की वजह से वह बीमार सी रहने लगी। श्री राघव को अपनी गौरवगाथा, मित्र-मंडली, सिनेमा, ड्यूटी आदि से तनिक फुर्सत नहीं थी। करुणा की क्रूरता उसके अपने शरीर पर भी रंग जमाने लगी थी। कौस्तुभ दिन-रात उसकी सेवा करता, वह भूल जाता कि यह वही औरत है जो उसके स्वयं के बीमार पड़ने पर सेवा सुश्रुषा तो दूर उल्टे डाँट-फटकार लगाती, जैसे कि उसकी बीमारी उसके वश में रहती होगी या वह उसे परेशान करने को जानबूझकर बीमार पड़ा हो। करुणा का दुर्व्यवहार कौस्तुभ के लिए कम न होता था। कौस्तुभ भावुक था, सो शत्रुता शीघ्र भूल जाता था, धार्मिक था, अतः कर्म-फल सिद्धांत उसके बदले की भावना को दबा देती थी। वह तो शुद्ध हृदय वाला अपने नाम के अनुरूप उज्ज्वल और पारदर्शी था, जिसके आर-पार निर्बाध रूप से देखा जा सकता था।

ना ही कौस्तुभ, ना ही करुणा उस दीपावली की घटना को भूल पाते होंगे, जो कुछ क्षण के लिए ही सही पर आदर्श और प्रेम का अनूठा संगम था। हुआ यूँ कि श्री राघव अपने मित्र के साथ उन्हीं के घर गए हुए थे शांति बड़ी हो चुकी थी। छः साल की वह चंचला पटाखों के रंग-बिरंगे चकाचौंध से आकर्षित होकर बाहर उसे देखने को निकली, अचानक एक रॉकेट का पटाखा उसकी ओर बढ़ ही रहा था उसी समय कौस्तुभ उसे बुलाने आ रहा था और उसे बचाने के प्रयास में उसका हाथ बुरी तरह जल गया। करुणा किंकर्तव्यविमूढ़, यह सब देख रही थी। शांति मामा-मामा चिल्लाते उससे लिपट गई और करुणा का ममत्व श्राव एक बार कौस्तुभ के लिए भी हुआ था। भरे सागर में ज्वार आया और कुछ एक बूंदें उस प्यासे के मुँह में गयीं जो वाकई संजीवनी की तरह थी। कुछ देर के लिए करुणा भूल गई कि यह मेरा चचेरा भाई है। भ्रमवश ही सही, पर उस समय उसके सजल नेत्रों ने कौस्तुभ में अपना बेटा तलाशा था।

शादी के 10 वर्ष बाद भी करुणा एक पुत्र पैदा न कर सकी थी। यह उसके ममत्व के बड़े खाली रेगिस्तान की तरह था। करुणा के लिए दूसरी समस्या समाज और इसकी रूढ़िवादी विचारधारा थी। पर यह सभी चिंताएं, सभी समस्याएं कौस्तुभ पर ही क्यों विराम लेती थी, यह स्वयं भी उसे ज्ञात नहीं था। अजीब द्वन्द्व था उसके मन में। कौस्तुभ करुणा के पुत्र विहीन होने और इससे जुड़े दुःख को समझता था, पर पानी सामने हो, प्यासा न पीना चाहे तो जल निर्दोष है न!

क्रमशः



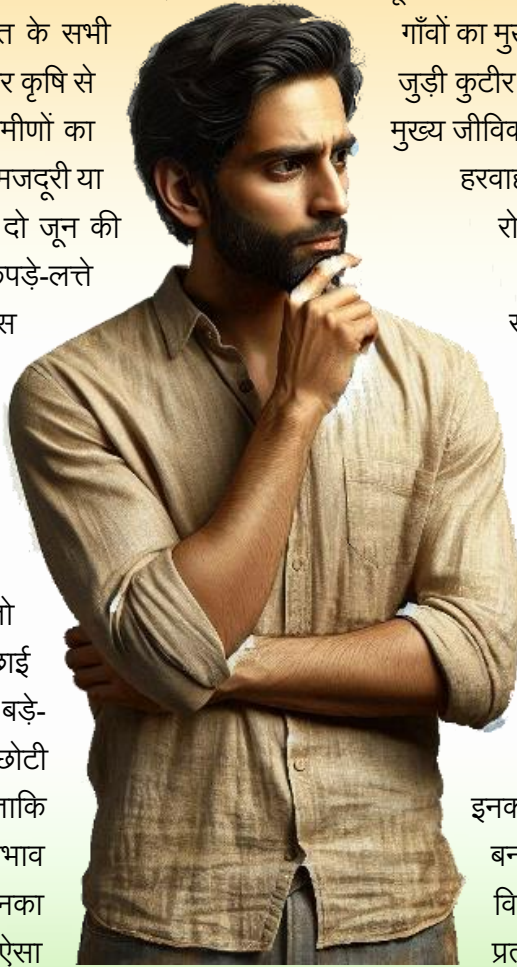


जहां चाह वहां राह

श्री योगेंद्र कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

आज से तीस वर्ष पहले की बात है कि गंगा किनारे लक्ष्मीपुर नामक एक गाँव था, यह गाँव बड़ा ही खुशहाल एवं समृद्ध था। गंगा की ओर से चलने वाली हवाएं न केवल मनुष्यों के लिए स्वास्थ्यवर्धक थीं बल्कि उस गांव के खेतों में लहलहाती फसलों में और चार चाँद लगा देती थीं लेकिन उस गाँव का संपर्क सड़कों, अस्पतालों एवं बिजली से काफी दूर था। गाँव के लोग सड़कों, अस्पतालों एवं बिजली की सुविधाओं को केवल सपने में सोच सकते थे। इनका आने जाने का मात्र एक साधन नाव ही था। कुछ नावें तो इस गांव के निवासियों के ही थीं।

इस गाँव में छोटे-बड़े किसान, थे। तीस वर्ष पहले भारत के सभी कृषि को ही समझते थे और कृषि से के अलावा मजदूरी ही ग्रामीणों का लोग बड़े किसानों के यहाँ मजदूरी या बड़ी मुश्किल से ये लोग दो जून की पाते थे साथ ही साथ कपड़े-लत्ते पड़ता था, क्योंकि पैसा उस आर्थिक स्थिति में पेशेवर व्यवसाय के अशिक्षित, छोटे जाति साहूकारों के कर्जदार परिवार इन लोगों के मानो देश से आज़ादी तो दिमाग के गलियारों में छाई था कि किसी भी गाँव के बड़े-पूरा करवाने हेतु छोटी-छोटी पर बसाकर रखते थे, ताकि तथा इनपर दासता का प्रभाव रहने के लिए था, इससे उनका और न कभी बदलेगी ऐसा आजादी मिलने के बाद भी गरीब, गरीब रह गया और अमीर और अमीर होते चले गए।



साहूकार तथा अन्य पेशेवर जाति के लोग निवास करते गाँवों का मुख्य व्यवसाय, कल-कारखाना, उद्योग मात्र जुड़ी कुटीर उद्योग धंधे एवं पारम्परिक पेशा व्यवसाय मुख्य जीविका का साधन था। छोटे जाति-जनजाति के हरवाही करते थे, पर मजदूरी इतनी कम थी। रोटी अपने परिवार के लिए व्यवस्था कर पहनने के लिए दूसरों पर निर्भर रहना समय कुछ लोगों तक ही सीमित था। अपनी सुधार लाने के लिए कुछ लोग अपने साथ मजदूरी करते थे, पर ज्यादातर एवं गरीब लोग बड़े-बड़े किसानों एवं रहते थे। साथ ही साथ ये सब गरीब सामने हमेशा हाथ जोड़े खड़ा रहते थे, चली गई, पर दासता का प्रभाव उनके रहती थी, इसका जीवित उदाहरण यह बड़े जमींदार या किसान अपने कार्य को एवं गरीब जातियां अपने गाँव से कुछ दूरी इनको काम के लिए मजदूरों की कमी ना हो बना रहे, यह रोजगार केवल उन्हें जीवित विकास या तकदीर नहीं बदल सकती थी। प्रतीत होता है, खासकर भारत को सत्तर वर्ष

कहने का तात्पर्य यह है कि गुलामी की दासता तथा उनके जीवन के आर्थिक विकास की राहों की लगाम इन बड़े-बड़े किसानों, जमींदारों एवं साहूकारों के हाथ में थी। इसकी बड़ी वजह कमजोरी थी उनमें व्याप्त अशिक्षा, साथ ही साथ ऊँच-नीच एवं छुआछूत तथा अमीरी-गरीबी की भावना पूरे समाज में फैली हुई थी, इस बीमारी ने इतनी गहरी पैठ बना ली है कि पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ता ही जा रहा है अभी तक इस समाज से पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। आज तो पूरी राजनीतिक पार्टियों की एजेंडा पूरी तरह जातिवाद एवं धर्म पर आकर रुक गई है। उस समय के समाज और आज के समाज में काफी अंतर है, उस समय के लोगों में अमीरी-गरीबी की खाई के बावजूद एक दूसरे को इज्जत और आदर-सत्कार करते थे तथा लोगों में ईमानदारी और प्रेम की भावना रहती थी। ये लोग मानकर ही बैठे थे कि भगवान ने हमें मेरे

मालिक को सेवा करने के लिए ही धरती पर भेजा है। हम लोग इनकी बराबरी कभी कर ही न सकते थे। उस समय ऊँच-नीच की भावना रहने के बावजूद भी समाज कभी भी आज की तरह जातिवाद के समीकरण में बँटा नहीं था, लोग एक दूसरे को मरने-मारने की बात नहीं करते थे, साथ ही साथ समाज में इतनी घृणा एवं द्वेष भी नहीं था जितना आज है।

ऐसा कहा जाता है कि जहाँ सरस्वती है वही लक्ष्मी है अर्थात् जहाँ सरस्वती है वहाँ लक्ष्मी स्वयं आ जाती है और गरीबी के अंधकार को दूर करके जीवन-यापन के मार्ग को सुलभ बनाकर समाज में इज्जत और सम्मान की राह को प्रशस्त करती है। इस संदर्भ को एक वाक्यांश द्वारा प्रस्तुत करना चाहते हैं:

जब मैं छोटा था अर्थात् जब मैं छठी सातवीं कक्षा में पढ़ता था तो मैं और मेरे भाई ज्यादातर दादा जी के साथ बरामदा पर सोया करते थे। हम लोगों के अलावा गाँव के और कुछ लोग भी सोने आते थे। हम लोग सिर्फ खाना खाने के लिए घर जाते थे पर खेलने तथा स्कूल के बाद ज्यादा समय दलान पर ही बीतता था और शाम में मैं और मेरे भाई पढ़ने के लिए बैठते थे और दो घंटे तक पढ़ाई करते थे क्योंकि हमें पढ़ाने के लिए एक गुरुजी आते थे। गुरुजी को पढ़ाने के बदले मेरे घर पर सुबह-शाम खाना खाने आते थे तथा रहने के लिए उनको एक अलग से कमरा दिया गया था। इससे ज्यादा उन्हें नहीं चाहिए था, क्योंकि वे एक राज्यकृत मध्य विद्यालय के शिक्षक थे और शिक्षा के व्यापार को गलत समझते थे।

बरामदे में एक दिलचस्प बात थी कि लोग एक दूसरे की बहुत इज्जत करते थे। लोग रात में एक दूसरे से मिलने पर राम-राम भैया जी, प्रणाम चाचा, प्रणाम भैया इत्यादि जैसे संस्कारी शब्द बचपन से सीखने को मिला। इसके अलावा सोते समय कोई न कोई रामायण की चौपाई, महाभारत, विक्रम बेताल देश में जन्मे शूरवीरों की अच्छी एवं प्रेरणादायक कहानियाँ हम लोगों के जीवन में प्रणोदक का काम किया करते थे।

एक शाम मैं दादा जी के साथ बैठा था और मुझे उस शाम को पढ़ने का मन नहीं कर रहा था, क्योंकि तबीयत ठीक नहीं लग रही थी तो उन्होंने मुझे घरेलू उपचार नुस्खे की दवाई दी थी और मैं दवा खाकर लेट गया। मेरे दादा जी एक वैद्य थे। लोग उन्हें वैद्य बाबू कहकर पुकारते थे। वैसे भी बिहार सरकार के स्वास्थ्य विभाग से सेवा निवृत्त कर्मचारी थे। गाँव के कुछ लोग तबीयत खराब रहने पर दवा लेने आते थे और कुछ लोग दूसरे गाँव से आकर दवा लेने आते थे इसलिए अक्सर दलान पर कुछ लोगों की भीड़ लगी रहती थी कुछ लोग दलान के अंदर बैठे रहते थे कुछ लोग दलान के बाहर, पर दोनों प्रकार के व्यक्तियों का इलाज प्रेम पूर्वक करते थे, कभी भी दोनों में भेद-भाव की समस्या उत्पन्न नहीं हुई, इसलिए उनको दोनों तरफ से इज्जत और आदर सत्कार मिलता था।

एक दिन मैंने पूछा कि दादा जी, कुछ लोगों को अन्दर बैठाकर इलाज करते हैं, कुछ लोगों को दलान के बाहर ऐसा क्यों? फीस तो आप दोनों से लेते हैं, उन्होंने मुझे बताया कि समाज की जो बनावट या व्यवस्थाएँ हैं या जो भेद-भाव एवं ताना-बाना है। उनको निभाना पड़ता है पर चिकित्सक, गुरु, वकील, भगवान एवं दुकानदार के नजरों में सभी एक इंसान है क्योंकि सभी को ईश्वर ने ही बनाया है, जैसे पानी, हवा, सूर्य की रोशनी, अग्नि, खून और अनाज के साथ-साथ विद्या और लक्ष्मी, किसी भी इंसान के धर्म, सम्प्रदाय, लिंग, रंग एवं जाति के साथ भेद-भाव नहीं करती है। रामायण में लिखा है भगवान राम, माता शबरी एवं कृष्ण लीला में भगवान कृष्ण ने भी भीलनी के साथ कभी भेद-भाव नहीं किया था, इसके अलावा रावण का प्रमुख चिकित्सक सुसेन ने राजा के दुश्मन होते हुए भी राम के भाई लक्ष्मण को वाण लगाने पर उसके इलाज में कोई भेद-भाव नहीं किए थे तो मैं कैसे कर सकता हूँ, इनके जीवन का भेद-भाव, गरीबी और गुलामी का मुख्य कारण है अशिक्षा, वो कैसे?

देखो, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ जो उनके आँखों देखी, प्रत्यक्ष कहानी है। जब मैं डाल्टेनगंज के स्वास्थ्य केंद्र पर पदस्थापित था पर मुझे ज्यादातर गाँव में मरीजों को देखने जाना पड़ता था, क्योंकि उस समय शहरों की संख्या बहुत कम थी। मुझे एक दिन डाल्टेनगंज से 10 किलोमीटर दूर एक गाँव में मेरी ड्यूटी लगी, और उस गाँव में जाने के

लिए एक नदी पार करनी पड़ती थी और नदी की चौड़ाई काफी बड़ी थी इसलिए एक नाव ही सहारा था उस गाँव में जाने के लिए जब मैं उस गाँव में पहुँचा तो एक गरीब मजदूर एवं मजबूर व्यक्ति अपनी माता जी का इलाज करवाने पहुँचा, मैंने उसको दवा देकर भेज दिया। एक दिन मैं उसके मुहल्ले से लौट रहा था, तो उसने मुझे देखा और कहा कि वैद्य जी मेरी माता जी आप की दवा से अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुई है पर पहले से अच्छी है इसलिए मैं उसके साथ उसके घर पहुँचा और मैंने देखा कि उसका घर सिर्फ दो कमरे का था, चारों ओर से मिट्टी की दीवार और उसपर से फूस-पुआल का छप्पर था, देखने में लगता था कि बारिश के दिन में छप्पर से पानी गिरता होगा, फिर भी उसने मेरा आदर सत्कार किया, वह बेचारा एक गरीब मजदूर था, वह भी दूसरे किसान के यहाँ मजदूरी करता था। मजदूरी के अलावा वह अपना पेशेवर व्यवसाय जूते-चप्पल सीलकर अपने परिवार का जैसे-तैसे जीवन-यापन करता था, मैंने उसके माता जी को देखकर दवा दी और एक महीने तक दवा खाने को कहा।

उस आदमी का परिवार उस जमाने में बहुत छोटा था, उनके दो बेटे और एक छोटी बेटी थी। बड़ा बेटा अशिक्षित एवं पिता के साथ काम करता रहता था। छोटा बेटा सातवीं क्लास तक गाँव में पढ़ा और आगे पढ़ाई गाँव के आस-पास उपलब्ध नहीं थी, बल्कि शहर में उपलब्ध थी। वह पढ़ने में बहुत तेज और मेहनती था, इतना उसके पास संसाधन उपलब्ध नहीं था कि उसके पिता जी उसे शहर में पढ़ा सके। उसके पिताजी ने भी कुछ लोगों से आर्थिक मदद मांगी और मजदूरी करके चुकाने की बात की, पर बात नहीं बनी। अंततः उसने बेटे के सामने हाथ जोड़कर कहा पढ़ाई का सपना छोड़कर मेरे साथ काम करो या अपना पेशेवर व्यवसाय करो, पर उसका दिल नहीं माना।

लोग कहते हैं कि ईश्वर जब किसी के आगे बढ़ने के सभी दरवाजे बंद कर देते हैं तो उनके लिए अन्य दरवाजे भी खोल देते हैं, बशर्ते अन्य दरवाजे से पार करने के लिए, साहस, जज्बा, जोश, पागलपन, मेहनत, त्याग, तपस्या और समर्पण की भावना होनी चाहिए। ऐसे भी हरिवंश राय बच्चन ने अपनी कविता में लिखा है:-

मन का हो तो अच्छा ।

मन का न हो तो और अच्छा ॥

इसलिए उस लड़के का लक्ष्य और इच्छा उनके मन के मुताबिक नहीं चल रहा था क्योंकि ईश्वर ने उसके लिए कुछ और सोच कर रखा था, उसने माँ-बाप को समझाया कि मैं शहर में काम-धंधा करके अपनी पढ़ाई कर लूंगा, लेकिन माँ-बाप भेजने को तैयार नहीं थे। पर एक दिन वह चुपके से घर छोड़कर अपने लक्ष्य की ओर चल पड़ा। इस वाक्यांश पर श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी द्वारा रचित कविता में कहा गया है-

हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा।

काल के कपाल पर लिखता हूँ मिटाता हूँ ।

गीत नया गाता हूँ॥

जो लड़का कभी गाँव से बाहर निकला नहीं था वह किसी तरह डाल्टेनगंज पहुँचा, पर उसको समझ में नहीं आ रहा था कि मैं किधर जाऊँ, क्योंकि वह बाहरी दुनिया से पूरी तरह अनजान था वह किसी भी जिले, प्रदेश से अपरिचित था। जब वह बस में बैठा तो कंडक्टर ने पूछा कहाँ जाओगे? उसने कुछ बोला नहीं, क्योंकि शहर या जिले के नाम से परिचित था ही नहीं, पर उसने पूछा यह बस कहाँ जाएगी तो कंडक्टर ने कहा रांची। बस मैं भी रांची जाऊँगा। जब गाड़ी चल पड़ी तो उसके मन में काफी उथल-पुथल चलने लगी साथ ही साथ आँखों से गंगा-यमुना की धार बहने लगी, क्योंकि वह परिवार से दूर जा रहा था एवं अपनों से बिछड़ने का भी गम था। उसके दिल दिमाग के बीच सकारात्मक और नकारात्मक विचारों की लड़ाई चल रही थी अंत में दिल की बातों को पकड़कर आगे बढ़ता चला, साथ ही साथ उसे हिम्मत भी मिली कि चाहे कुछ भी हो मुझे हर हाल में पढ़ाई करनी है और पढ़ लिखकर बड़ा आदमी बनना है।





नारी का स्वरूप: गृहिणी और कामकाजी

सुश्री प्रतिमा मजूमदार
सहायक पर्यवेक्षक

जागो,
घर की चूल्हा-चौका संभालो।
तुम्हारे हाथों में बसी खुशबू,
परिवार के लिए पकाओ, खिलाओ।

तुम्हारी ममता का कोई सानी नहीं,
प्रेम से भरी, तुम हो आशीर्वाद की निशानी।
बच्चों की हंसी में ढूँढती हो खुशी,
हर एक लम्हा समर्पित, घर की बगिया हरी।

फिर भी तुम हो कामकाजी नारी,
बाहर की दुनिया में भी तुम हो प्यारी।
दफ्तर की जिम्मेदारियाँ बखूबी निभाती,
सपनों की ऊँचाई तक उड़ान भरती जाती।

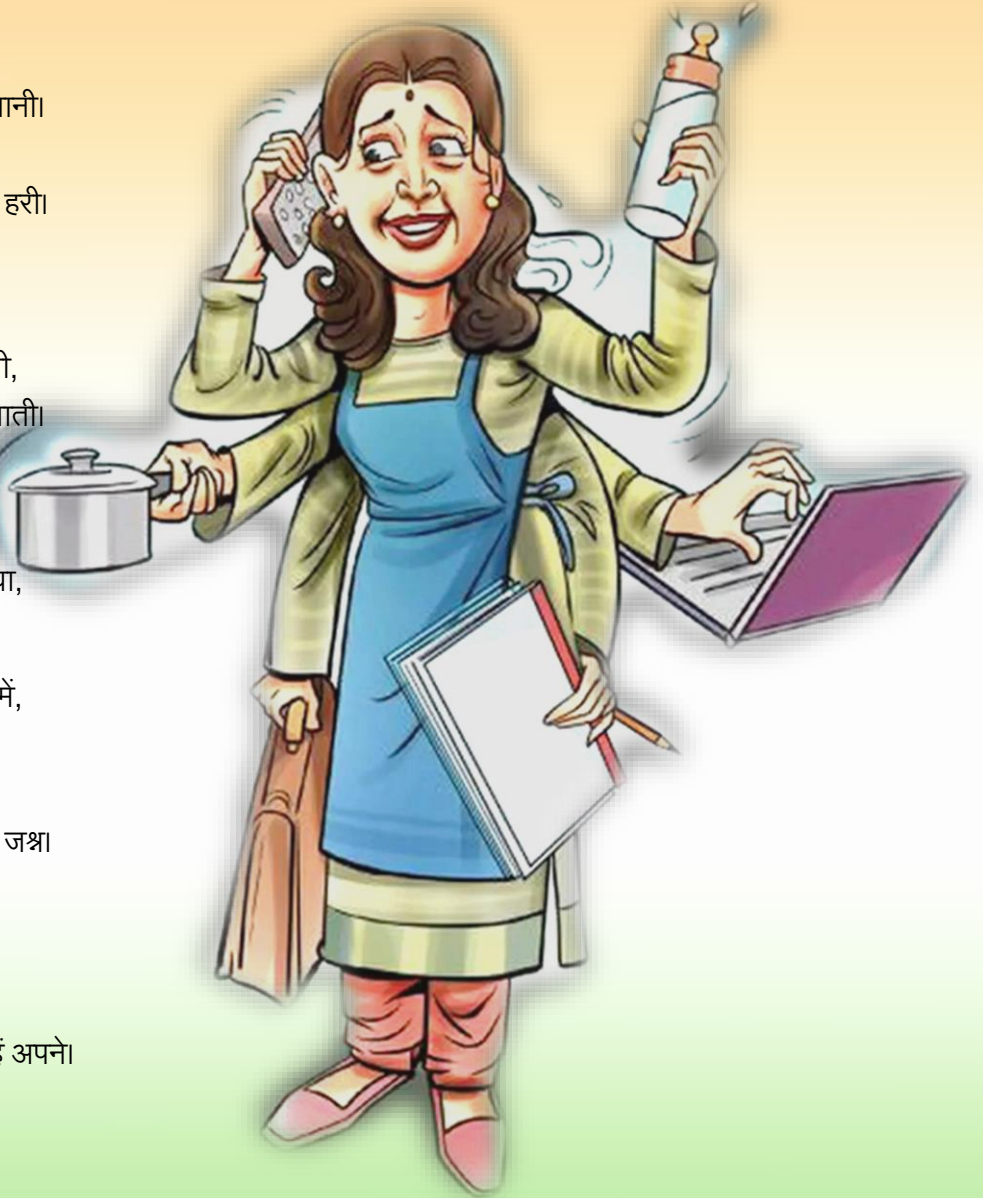
समय की पाबंदी हो या काम का बोझ,
तुम्हारे चेहरे पर मुस्कान का सोचा।
हर चुनौती को तुमने हंसते हुए अपनाया,
तुम्हारे संकल्प से दुनिया ने सीखा।

कभी कंप्यूटर के सामने, कभी मीटिंग में,
हर भूमिका में तुम हो सजीव प्रेरणा।
तुम्हारे प्रयासों से संसार रोशन,
तुम्हारी मेहनत का फल है उन्नति का जश्रा।

घर और बाहर का संतुलन,
तुम्हारी ताकत, तुम्हारा नियंत्रण।
तुम्हारी आंखों में बसते हैं सपने,
तुम्हारी कर्मठता से नए रास्ते खुलते हैं अपने।

तुम हो सहनशीलता की मूरत,
तुम्हारी कहानी में संघर्ष की सूरत।
तुम्हारी मेहनत को नमन हमारा,
तुम्हारी उपलब्धियों को सलाम हमारा।

नारी, तुम हो अद्वितीय शक्ति,
तुम्हारे बिना अधूरा है यह युक्ति।
गृहिणी हो या कामकाजी,
तुम्हारे हर रूप में बसी है एक नव जागृति।





पिता

श्री योगेंद्र कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

न मुझे पैसों का गम था

न खिलौनों का दर्द था

कलियों की उदासी से

घर की वादियों सुनसान थी।

इन वादियों में बहार कैसे आयें

ये सोचकर एक शासक हमेशा परेशान था।

जेब में पैसे थे या नहीं

इस बात का मुझे एहसास नहीं था

उनके साथ बाहर निकलते थे तो

पूरा बाजार अपना सा लगता था

क्या-क्या नहीं खरीदा

जी भर कर के खरीदा

क्योंकि घर का गवर्नर

मेरे साथ था।

पर डर उन्हें हमेशा।

यही लगा रहता था।

कहीं मैं बड़ा न माँग बैठु।

दिल तो उनका बहुत बड़ा था।

पर जेब में पैसे उनके पास।

बाजार के भाव से कम थे

मेरे घर में चाँद और।

सूर्य की कमी नहीं थी।

चाँद तो अपनी चाँदनी से।

अपने घर-संसार को शीतल रखती थी

सूर्य की किरणों से ही वह

अपनी चाँदनी बिखेरती थी

नन्हे-मुन्ने तारे उनकी चाँदनी

में ही अच्छे दिखाई पड़ते थे।

सूर्य बेचारा तो मेहनत की

आग में दिनभर जलता था

अपने घर-संसार की खुशियों के लिए

तन के पसीने को बाजार में बेचता था

लाख कष्ट सिर पर रहने के बावजूद

अपने बच्चों के बीच मुस्कान रखता था।

पर मुझे हमेशा एक डर

सा लगा रहता था

सूर्य बुझ जाये तो पुनः

अगले दिन निकल आता है

पर पिता बुझ गये तो

पूरा घर-संसार अंधकार हो जाता है

हर सूर्य में दिन एक दिन शाम आता है

जीवन का वह ठहराव आता है

इनके शाम से ही

तारों में प्रकाश आता है

नयनों की नगरी में

इनसे गहरा प्यार होता है

वास्तविक जीवन में इनका

कोई आयाम नहीं होता है

सूर्य से ज्यादा इनमें अभिमान होता है

पर तारें भूल जाते हैं कि

सूर्य इनका बाप होता है

इसके बिना पूरा दुनिया

बर्बाद हो जाता है।



चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन – 2024, भारत मंडपम, नई दिल्ली की झलकियां



भारत मंडपम



मंच संचालक सुश्री पूजा शुक्ला



मंच संचालक श्री जैनेंद्र सिंह, सहायक निदेशक,
ऑल इंडिया रेडियो



वीर-रस कवि श्री हरिओम पंवार

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और पुरस्कार से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा – हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!





प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – असम का कार्यालय, मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी - 781029

ई-मेल : agaeassam@cag.gov.in